हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मई, 2015 वर्ष 14 अंक 03

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक) 30 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

खादिम हूँ मैं

बन्दा तेरा हूँ या रब, खादिम मैं दीन का हूँ
खादिम हूँ मैं वतन का, खादिम मैं कौम का हूँ
तेरे नबी पे या रब दिल से फिदा हुआ हूँ
माबूद फकत तू है, एलान कर रहा हूँ
या रब मदद हो तेरी तेरा रहूँ सदा
खिदमात से मख़लूक़ की तेरी मिले रिज़ा
या रब न मेरे जरीअ़े ईजा किसी को पहुंचे
या रब न बात झूठी मेरी जुबाँ से निकले
या रब न कोई बिदअत मेरे सबब से फैले
कल्मा जो मैंने सीखा मेरी ज़बाँ से निकले
या रब बना ले अपना, या रब बना ले अपना
या रब नबी की सुन्नत, शेवा मेरा हो अपना

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
शम्सी और क़मरी महीने	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	6
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	10
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	17
तबलीगे नबवी सल्ल0 और उसके	अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी रह0	19
आलमे इस्लाम पर मग़रिब का	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	21
इहानते रसूल– बदतरीन जुर्म	मौलाना सै0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी	28
शुक्रे इलाही की अहमियत	मौ0 सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0	29
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	31
लेखों तथा भाषणों की असभ्य	मौ0 सै0 मु0 वाजेह रशीद हसनी नदवी	33
मधु मक्खी	राशिदा नूरी	38
हार्ट अटैक से बचाएंगे कद्दू	सुनील कुमार	39
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकर:

अनुवाद- क्या तुम में से किसी को यह पसंद आता है कि हो उसका एक बाग खजूर का, बहती हो उसके नीचे नहरें, उसको उस बाग में और भी सब तरह का मेवा हासिल हो, और आ गया उस पर बुढ़ापा और उसकी औलाद हैं बूढ़ी, तब उस बाग पर एक बगोला आ पड़ा जिसमें आग थी जिससे वह बाग जल गया, यूं तुम को अल्लाह समझाता है निशानियाँ ताकि तुम गौर करो[(1)(266)], ऐ ईमान वालो पाकीजा चीजें अपनी कमाई में से खर्च करो, और उस चीज़ से कि जो हमने पैदा किया जमीन से तुम्हारे वास्ते, और इरादा न करो गंदी चीज़ का उसमें से कि उसको खर्च करो हालांकि तुम उसको कभी न लोगे मगर यह कि चश्म पोशी कर जाओ, और जान रखो कि अल्लाह बे नियाज़ है और बड़ी खूबियों वाला है[(2)(267)], शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और तुमको बेहयाई यानी बुख्ल का हुक्म करता है, और अल्लाह तआला तुम से वादा करता है अपनी तरफ से गुनाह माफ कर देने का और ज़ियादा देने का, और अल्लाह तआला वुसअत वाले हैं खूब जानने वाले हैं[(3)(268)]।

तफ्सीर (व्याख्या):-

1. यह मिसाल उनकी है जो लोगों को दिखाने को सदक़ा खैरात करते हैं या खैरात करके एहसान रखते हैं और तकलीफ पहुंचाते हैं यानी जैसे किसी आदमी ने जवानी और ताकत के वक्त बाग तैयार किया ताकि कमज़ोरी और बुढ़ापे में उससे मेवा खाये और ज़रूरत के समय काम आये, फिर जब बुढ़ापा आया और मेवे की जरूरत महसूस हुई तब वह बाग खास उस ज़रूरत के मौक़े पर जल गया यानी सदक़ा मिस्ल मेवेदार बाग के है कि उसका मेवा आखिरत में काम आये, जब किसी की नीयत बुरी है तो वह बाग जल गया फिर उसका मेवा जो सवाब है, क्यों कर नसीब हो, अल्लाह तआला इसी तरह खोल कर तुम को आयतें समझाता है ताकि गौर करो और समझो।

2. यानी अल्लाह के नज़दीक सदक़े के कबूल होने की यह भी शर्त है कि माल हलाल कमाई का हो, हराम का माल और शुब्हे का माल न हो और अच्छी से अच्छी चीज़ अल्लाह की राह में दे बुरी चीज़ खैरात में न लगाये कि अगर कोई तुमको ऐसी वैसी चीज़ दे तो जी न चाहे लेने का मगर शर्मा शर्मा कर, पर खूशी से हरगिज न ले और जान लो कि अल्लाह बे नियाज़ है तुम्हारा मोहताज नहीं, और खूबियों वाला है अगर बेहतर से बेहतर चीज़ दिल के शौक और महब्बत से दे तो पसंद फरमाता है।

शेष पृष्ठ .....05.... पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

न जिहाद न जिहाद की तमन्ना-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस आदमी ने पूरी ज़िन्दगी जंग नहीं की और न जंग की तमन्ना की तो उसकी मौत निफाक़ (कपटाचार) के एक भाग पर होगी। (मुस्लिम)

मजबूर (विवश) जिहाद में शरीक है-

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि हम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ किसी गज़वे (धर्म युद्ध) में शरीक थे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मदीने में कुछ लोग रह गये हैं उनको बीमारी ने मजबूर कर दिया, न तुमने कोई मसाफत व दूरी तै की और न कोई वादी पार की मगर वह तुम्हारे शरीक हैं। एक रिवायत में है कि उनको किसी उज़्र ने मजबूर कर दिया और एक रिवायत में है कि वह अज्रो सवाब में तुम्हारे शरीक हैं। (बुखारी)

मक़बूल जिहाद की शर्त-

हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि0 से रिवायत है कि एक देहाती रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज किया या रसूलुल्लाह कोई आदमी माले गनीमत की लालच में जंग करता है तो कोई नामवरी के लिए कोई बहादुर कहलाने के शौक़ में जंग करता है तो कोई हमीयत व गैरत के लिए।

एक रिवायत में है कि कोई गुस्से में आ कर जंग करता है तो इरशाद फरमाइये कि कौन सी जंग अल्लाह के रास्ते में है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल ने फरमाया जो अल्लाह का कलिमा बुलन्द करने के लिए जंग करता है उसकी जंग अल्लाह के रास्ते में है।

(बुखारी—मुस्लिम)

जिहाद का पूरा सवाब-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स़ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो फौज या जमात जिहाद करे और फिर सही सालिम माले गनीमत के साथ पलट आये तो उसने जल्दी दो तिहाई मज़दूरी पा ली और जो फौज या जमात जिहाद करे फिर कुछ उसके साथ न आये और वह सब काम आ जायें तो उनके लिए पूरा पूरा अज्र है।

(मुस्लिम)

इस उम्मत की सैर व तफरीह अल्लाह के रास्ते में जिहाद है-

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है कि एक आदमी ने अर्ज किया मुझको सैर व तफरीह की इजाज़त फरमाइये, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया

मेरी उम्मत की सियाहत अल्लाह की राह में जिहाद करना है–

(अबूदाऊद)

वापसी, रवानगी से कम नहीं–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया गज़वे से वापस होने में उतना ही अज्र है जितना कि जाने में।

(अबूदाऊद)

मुजाहिदीन का स्वागत–

हज़रत साइब बिन यजीद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गज़वये तबूक से तशरीफ ला रहे थे, लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्वागत को गये, मैं भी लड़कों के साथ सनीयतुल विदा पर आप से जा मिला (अबूदाऊद) और बुखारी की एक रिवायत में है कि रावी ने कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात करने को लड़कों के साथ सनीयतुल विदा तक गये थे।

तीन बातें–

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस आदमी ने न जिहाद किया न किसी गाज़ी के लिए सामाने जंग तैयार किया, न किसी गाजी की गैर मौजूदगी में उसके घर वालों की खैर खबर ली तो उसको अल्लाह तआला मरने से पहले किसी सख्त तकलीफ में मुबतला कर देगा। (अबू दाऊद)

जान व माल और ज़बान से जिहाद–

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुश्रिकीन से अपने मालों, जानों और अपनी ज़बानों से जिहाद करो। (अबूदाऊद)

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा.....

3. जब किसी के दिल में ख्याल आये कि अगर खैरात करूंगा तो मुफ्लिस रह जाऊँगा और हक़ तआला की ताक़ीद सुन कर भी यही हिम्मत हो और दिल चाहे कि अपना माल खर्च न करे और वादये इलाही से ऐराज़ करके वादये शैतानी पर तबीयत को मैलान और एतिमाद हो, तो उस को यक़ीन कर लेना चाहिए कि यह बात शैतान की तरफ से है यह न कहे कि "शैतान की तो हमने कभी सूरत भी नहीं देखी हुक्म करना तो दरकिनार रहा" और अगर यह ख्याल आये कि सदका व खैरात से गुनाह बखशे जायेंगे और माल में भी तरक़्की और बरकत होगी तो जान लो कि यह मज़मून अल्लाह की तरफ से आया है और खुदा का शुक्र करे और अल्लाह के खज़ाने में कमी नहीं वह सबके जाहिर व बातिन और नीयते अमल को खूब जानता है।

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

शम्सी और क़मरी महीने

सूर्य मास तथा चन्द्र मास

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

शम्सी महीनों (सूर्य मास) से हमारा तात्पर्य है वह महीने जो सूरज से सम्बन्धित बनाये गये हैं, वह अंग्रेज़ी महीने भी कहलाते हैं वह यह हैं— जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जूलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर।

कमरी महीनों (चन्द्र मास) से हमारा तात्पर्य है वह महीने जो चांद देख कर आरम्भ होते हैं, उनको अरबी महीने भी कहा जाता है, वह यह हैं— मुहर्रम, सफ़र, रबीउल अव्वल, रबी उस्सानी, जुमादल ऊला, जुमादल उख़रा, रजब, शाबान, रमज़ान, शव्वाल, जीक़ादा, जिलहिज्ज।

हिन्दी महीने भी चाँद ही से सम्बन्धित हैं परन्तु यह चांद देख कर नहीं आरम्भ होते अपितु पूर्ण मासी (चाँद की चौदहवीं रात) को समाप्त हो कर उसके बिहान से आरम्भ होते हैं, हिन्दी महीने यद्यपि चाँद से सम्बन्धित हैं परन्तु उनको सूर्य मास से मिलाने के लिए हर तीसरे वर्ष कोई एक महीना दो महीनों का कर लेते हैं, उसको मल मास का महीना कहते हैं, ऐसा इसलिए करते हैं कि मौसमों का बदलाव सूर्य मास के अनुकूल होता है।

हिन्दी महीने यह हैं— चैत, बैसाख, जेठ, असाढ़, सावन, भादों, कुँवार, कार्तिक, अगहन, पूस, माघ, फागुन। चैत में रबी की फस्ल कटती है, इसी महीने से गर्मी आरम्भ हो जाती है, असाढ़ से बारिश शुरु हो जाती है और खरीफ़ (धान आदि) की फस्ल की बुवाई शुरु हो जाती है। कुँवार में यह फस्ल कटती है, कार्तिक में रबी (गेहूँ आदि) की फस्ल बोई जाती है, इसी महीने से जाड़ा आरम्भ हो जाता है और पूस माघ में बहुत बढ़ जाता है, फागुन में जाड़ा हल्का हो जाता है। उत्तरी भारत के किसान इन महीनों और इनके पखवाड़ों को खूब याद रखते हैं, उनके खेती के काम इन्हीं महीनों के हिसाब से होते हैं। हिन्दु भाइयों के सभी पर्व इन्हीं महीनों के हिसाब से होते हैं।

साधारणतः नवम्बर से जाड़ा आरम्भ होता है फिर दिसम्बर और जनवरी में बहुत बढ़ जाता है, फरवरी में गुलाबी जाड़ा रहता है, मार्च से गर्मी आरम्भ हो जाती है, अप्रैल में खासी बढ़ जाती है और मई व जून में कड़ाके की धूप लू और गर्मी होती है, जूलाई में बारिश आरम्भ हो कर सितम्बर तक उसका सिलसिला रहता है, यह मौसम उत्तरी भारत और उस की सीध में पृथ्वी के अर्ध उत्तरी गोले कार में रहते हैं।

अल्लाह ने मनुष्य को बुद्धि प्रदान की है उसने अपने अनुभव से जानकारियां प्राप्त कर ली हैं इससे बड़ी सरलता होती है। जाड़ा आने से पहले ही वह ढन्डक से बचने का प्रबन्ध कर लेता

है, गर्मी आने पे पहले धूप, लू और भीषण गर्मी के कष्ट से बचने का प्रबन्ध करता है। वह बारिश के आने से पहले बारिश से सुरक्षित रहने का प्रबन्ध करता है।

खेती करने वाले किसान जानकारी से लाभ उठा कर खरीफ (धान आदि लगाने का ऋतु) और रबी (गेहूँ आदि बोने की ऋतु) से अवगत होते हैं और उनके अनुकूल उसका प्रबन्ध करते हैं।

मुसलमानों की इबादतों (उपासनाओं) का सम्बन्ध सूर्य से भी है और चन्द्रमा से भी, उसकी पाँचों समय की अनिवार्य नमाज़ें सूर्य से सम्बन्धित हैं, भोर होने पर सूर्यादय से पहले तक फ़ज्र की नमाज़ पढ़ता है, फिर दोपहर में सूर्य ढलने पर जुह्र की नमाज़ पढ़ता है, और सूर्यास्त से पहले अस्र की नमाज़ अदा करता है। सूर्यास्त हो जाने पर मग़रिब की नमाज़ पढ़ता है, तथा सूर्यास्त के लगभग डेढ़ घण्टे बाद जब सूर्यास्त के स्थान पर लाली तथा सफ़ेदी दोनों समाप्त हो जाती हैं तो इशा की नमाज़ पढ़ता है। रमज़ान में भोर (सुब्हे सादिक़) होने से पहले तक सहरी खाता पीता है, यह सारी उपासनाओं का समय सूर्य से सम्बन्धित है, परन्तु याद रहे मुसलमान अल्लाह की उपासना करता है, वह सूर्य को नमन कदापि नहीं करता, वह सूर्य को रचने वाले की उपासना करता है। मुसलमानों के चार महत्वपूर्ण पर्व चन्द्रमा से सम्बन्धित हैं—

शाबान की 29 तारीख़ को यदि चाँद दिख गया तो दूसरे दिन से वरना 30 तारीख़ के पश्चात रमजान का मास आरम्भ होता है, मुसलमानों के लिए रमजान के रोजे रखना अनिवार्य हैं, वह भोर होने से पहले ही खाना पीना छोड़ देता है और भोर हो जाने पर उसके लिए खाना पीना वर्जित है, फिर सूर्यास्त तक वह खाने पीने तथा भोग विलास से दूर रहता है, बुरे कामों से बचता है, दूसरों के साथ भलाई करता है, सामर्थ्य के अनुकूल दान पुण्य करता है, 29 रमजान को यदि चाँद दिख गया तो दूसरे दिन वरना 30 के दूसरे दिन ईद मनाता है, नहा धो कर अच्छे कपड़े पहनता, सुगन्ध लगाता है, दातून करता है और मीठा खा कर दिन चढ़े ईदुल फित्र की नमाज़ सामूहिक रूप से पढ़ता है।

जिलहिज्ज का चाँद भी बड़ा महत्व रखता है इस महीने में हज होता है हज की इबादत मक्का मुकर्रमा जा कर ही होती है इसलिए संसार के कोने कोने से सामर्थ्य वाले मुसलमान जिलहिज्ज के महीने में हज की इबादत के लिए मक्का मुकर्रमा पहुँच जाते हैं और आठ जिलहिज्ज को मर्द अपने सिले कपड़े उतार कर एक सफेद चादर नीचे बाँध लेते हैं और एक ऊपर ओढ़ लेते हैं परन्तु सिर नहीं ढकते, औरतें अपने कपड़ों ही में रहती हैं एहराम की नियत करके आठ जिलहिज्ज को मिना पहुंच जाते हैं फिर 9 जिलहिज्ज को अरफात जाते हैं, 9,10 की बीच की रात मुजदलफा में बिताते हैं, दस की सुब्ह को मिना आ कर बड़े शैतान को कंकरियां मारते हैं,

कुर्बानी करते हैं, सर मुंडाते हैं, फिर हरम जा कर काबे का तवाफ़ करते हैं, 11, 12 ज़िलहिज्ज को तीनों शैतानों को कंकरियां मार कर हरम वापस आते हैं, और वदाई तवाफ करके हज पूरा करते हैं।

जो मुसलमान हज को नहीं जाते वह अपने यहां 10 ज़िलहिज्ज को ईदुल अज़हा की नमाज़ पढ़ते हैं, और मालदार लोग अल्लाह की राह में कुर्बानियां करते हैं। कुर्बानी का यह सिलसिला 10,11,12 जिलहिज्ज को सूर्यास्त से पहले तक रहता है।

मुहर्रम का चाँद दिखने पर 10 मुहर्रम को आशूरा का रोज़ा रखा जाता है और बहुत से सांस्कृतिक तथा प्रथा सम्बन्धित कई कार्य चाँद के महीनों से सम्बन्ध रखते हैं अतः मुसलमान बड़े प्रतिबंध से हर अरबी मास की 29 तारीख को चाँद देखने का प्रयास करते हैं ताकि चाँद की तारीख़ मालूम रहे, चाँद वर्ष के कई महीनों में 29 तारीख को दिखता है, परन्तु यह जन साधारण लोगों को अपितु अच्छे पढ़े लिखे लोगों को भी ज्ञात नहीं होता कि किस मास में यह 29 में होगा, कुछ खगोल वैज्ञानिक हिसाब लगा कर बता देते हैं कि किस मास में और किस छेत्र में 29 को चाँद दिखेगा, परन्तु इस्लाम सरल धर्म है उसका आदेश है कि चाँद देख कर ही तारीख मानो, ऐसा भी होता है कि अपने यहां से पश्चिम के दूर देशों (सऊदी आदि) में एक दिन का अंतर रहता है वहां एक दिन पहले चाँद दिख जाता है और कभी कभार तो दो दिन पहले दिख जाता है, अतः मुसलमानों को हिसाब का पाबन्द नहीं किया गया। चाँद की तारीख की निर्भरता चाँद के दिखने पर रखी गई है।

चाँद और सूरज के महीनों के अन्तर के कारण चाँद के महीने सूरज के महीनों में घूमते रहते हैं। चाँद के महीनों का वर्ष 354 दिनों का होता है जब कि अंग्रेजी महीनों का वर्ष 365 दिनों का होता है और हर चौथे वर्ष 366 दिनों का हो जाता है। इसका नियम यह है कि सदी छोड़ कर जो सन 4 से पूरा पूरा विभाजित होता है उस साल फरवरी 29 दिनों की होती है, वह साल 366 दिनों का हो जाता है, और तीन वर्षों में फरवरी 28 दिन की रहती है और साल 365 दिनों का रहता है।

चाँद के दिनों के साल में और सूरज के महीनों (अंग्रेज़ी महीनों) के हर महीने में आते रहते हैं इस वर्ष के कलेण्डर में शाबान 20 मई को और रमज़ान लगभग 19 जून को आरम्भ हो रहा है, अगले वर्ष यह दस दिन पहले शुरु हो जाएंगे इस प्रकार चाँद का महीना जिस अंग्रेजी महीने में आरम्भ होता है वह तीन वर्षों तक उसी महीने में रहता है फिर उससे पहले के महीने में चला जाता है। इस प्रकार हर 36 वर्षों पश्चात चाँद का महीना फिर उसी अंग्रेजी माह में आ जाता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति अंग्रेजी सालों से 36 वर्ष का होता है वह चाँद के हिसाब से 37 वर्ष का होता है।

शेष पृष्ठ .....17...पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

(पिछले अंक से आगे)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिस्र के हाकिम मकूक़स की तरफ़ से भेजी हुई एक बांदी मारिया बिन्त शमऊन क़िबतिया से जो अरब न थीं आज़ाद करके अपनी ज़ौजियत में लिया। इसी तरह एक दूसरी बांदी रैहाना बिन्त ज़ैद जो कबीले बनू नज़ीर की थीं, इस्लाम कुबूल करने के बाद उनको आज़ाद फरमाया और फिर उनको अपनी ज़ौजियत में कुबूल किया[1]। और इस तरह इंसानी मसावात (बराबरी) की मिसालें क़ायम कीं कि कोई खातून (महिला) बांदी रही हो तो आज़ाद कर देने के बाद आज़ाद खातून (महिला) के रुतबे में आ जाती है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह सब उस सूरत में किया कि दस्तूर के मुताबिक आप उन सबको बांदी रखते हुए बीवी वाला फाएदा उठा सकते थे लेकिन आपने ऊँच नीच खत्म करने के लिए ऐसा किया।

अज़वाजे मुतह्हरात (पाक बीवियों) में सबसे आख़िर में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रफ़ीक़—ए—हयात (जीवन साथी) बनने का सम्मान मैमूना बिन्त हारिस अलहिलालिया को हासिल हुआ।

बहरहाल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने विभिन्न महिलाओं से शादियाँ कुबूल फरमाईं जो कि सबके सब आपकी उम्र के 53 साल गुज़र जाने के बाद के ज़माने में हुईं उनमें कई का साथ दो तीन साल रहा, किसी के साथ इससे कम किसी के साथ इससे ज़ियादा। लेकिन सब सिर्फ आपकी मुबारक ज़िन्दगी के आखिरी 8—10 साल के अन्दर अमल में आया जो कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र के 53 साल से 63 की बीच की मुद्दत है।

आप अपनी उन बीवियों के मामले में मदीने के निवास की सूरत में बराबरी व इंसाफ़ से काम लेते थे और उसके लिए समय को बांटने का तरीक़ा एख्तियार करते और जब सफ़र का मौक़ा आता तो अपनी अज़वाजे मुतह्हरात के दरमियान कुरआ डाल कर जिसका नाम कुरआ में आता उसी को साथ ले जाते। इस तरह हर एक को सफ़र की रिफाक़त (साथ) का मौक़ा मिलता और यह सब अल्लाह तआला की "वही" (ईश्वाणी) के मुताबिक होता था। खालिस अपनी मर्ज़ी से नहीं होता था और ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला की तरफ से बताया गया जो अमल भी आप करते थे, उसमें अल्लाह तआला की तरफ से कोई हिकमत रखी गयी होती थी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हर रफ़ीक़—ए—हयात की अपनी खुसूसियत और अहमियत थी, जिसमे कोई इफादियत और हिकमत रखी गयी होती वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हासिल

---

1. जादुल मआद 1/108

होती थी। आपको उम्मत की रहनुमाई और अल्लाह तआला की तरफ से तय की गयी ज़िन्दगी के लिए क़ाबिले इत्तिबा (अनुसरण योग्य) नमूना होना था। शौहर और बीवी के बीच विभिन्न प्रकार के जो मसाएल उठते हैं उनके सिलसिले में शरीअत का जो हल होता उसके लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी से नमूना होना था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इज़दिवाजी ज़िन्दगी (वैवाहिक जीवन) के अनदुरूनी हालात के सिलसिले में इन्हीं पाक बीवियों से नबवी नमूने का इल्म शरअी हुक्म के रूप में सामने आना था। अतः हज़रत आयशा रज़ि0 के ज़रिये बहुत से हालात में नबवी आदर्श का स्पष्टीकरण हुआ। इसके अलावा बीवी से शौहर को इन्सानी स्तर पर जो ताक़त और तसकीने खातिर मिलना इंसान की प्राकृतिक ज़रूरत है वह भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी विभिन्न बीवियों से विभिन्न मौक़ो पर हासिल होती रही।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबूवत मिलने पर जिस तकवियत और तसकीने खातिर की इंसानी ज़रूरत थी, वह हज़रत खदीजा बिन्त खुवैलिद रज़ि0 से मिली, जिसका तज़किरा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आयशा रज़ि0 से किया। इस तरह सुलह हुदैबिया के मौके पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को संदेह हुआ कि आपके असहाब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कहने पर अमल नहीं कर रहे हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवी हजरत उम्मे सलमा रज़ि0 ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसा मशविरा दिया जिससे मसअला हल हो गया और सबने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक कुर्बानी के जानवरों की कुर्बानी कर दी और बाल बनवाए गये[1]।

हज़रत आयशा रज़ि0 (हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ की एक साल बाद नबूवत के 11वें साल शव्वाल में आपके निकाह में आईं) से दूसरे पहलुओं मे मदद मिली और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निजी ज़िन्दगी के मामलात में अहकाम मालूम हुए। उन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आमाल व अकवाल के सिलसिले में 2010 हदीसें रिवायत कीं जिनसे शरीअत के बहुत से मसाएल लिए गये हैं। इसके अलावा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद 48 साल तक हयात रहीं और इस मुद्दत में औरतों की दीनी तरबियत और दूसरी तरबियती कोशिशों को अंजाम दिया। 17 शाबान 57 या 58 हिजरी में इन्तिकाल किया और जन्नतुल बक़ी के कब्रिस्तान में दफ़न हुईं।

हज़रत हफ़सा रज़ि0 भी अपनी नेक अमली के साथ दीन की तकवियत का ज़रीआ बनीं और उनसे 200 हदीसें मरवी हैं। शाबान 3 हिजरी में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ौजियत में आईं। शाबान 45 हिजरी में मदीना मुनव्वरह में 60 साल की उम्र में इन्तिकाल किया।

---

1. सही बुखारी, किताबुशशुरुत..... अबूदाऊद 2725, मुसनद इमाम अहमद 4/323, 326, 328, 3331, जादुल मआद 3/295

उम्मुल मसाकीन हज़रत ज़ैनब बिन्त खुज़ैमा से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 4 हिजरी में निकाह किया। शादी के तीन महीने बाद रबीउस्सानी 4 हिजरी में वफ़ात पा गयीं और बक़ी में दफ़न हुईं।

उम्मे सलमा हिन्द बिन्त अबीउमय्या शव्वाल 4 हिजरी में आपकी ज़ौजियत में आयीं और 84 साल की उम्र में 59 हिजरी में इन्तिकाल किया और बक़ी में दफन हुईं।

हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश के ज़रिये मुतबन्ना (मुँह बोला बेटा) बनाने और उसके असर से जो रस्म क़ायम थी और अज़ादशुदा और बांदी और शरीफ़ज़ादी के दरमियान फ़र्क़ किये जाने को खत्म करने की मिसाल क़ायम हुई। ज़ीकाअदा 5 हजरी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में आईं और 53 साल की उम्र के 20 हिजरी में वफ़ात पा गयीं। बक़ी में दफ़न हुईं।

जुवैरिया बिन्त हारिस 5 या 6 हिजरी में आपके निकाह में आयीं 65 साल की उम्र में 56 हिजरी में इन्तिकाल किया और बक़ी में दफ़न हुईं।

हज़रत उम्मे हबीबा रम्ला बिन्त अबू सुफयान और उनके शौहर अब्दुल्लाह बिन जहश दोनों ने इस्लाम पर मक्के वालों की तरफ से जो तकलीफें उठायीं थीं उनसे मजबूर हो कर हबशा हिजरत की थी। हबशा में अब्दुल्लाह बिन जहश ईसाई औरतों के फितने में पड़ कर मुरतद (विधर्मी) हो गये थे। उनसे हज़रत रम्ला की ज़ौजियत खत्म हो जाने पर जो सदमा उनको हुआ उसकी पूर्ति हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको अपनी ज़ौजियत में ले कर फरमाई। हज़रत रम्ला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेहतर रफीक़-ए-हयात (जीवन साथी) के तौर पर ज़िन्दगी गुज़ारी।

सफ़िया बिन्त हुय्यि बिन अख्तब को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वाकिये ख़ैबर के बाद सन् 7 हिजरी में अपनी ज़ौजियत में लिया। 50 हिजरी में इन्तिक़ाल किया और बक़ी में दफ़न हुईं।

मैमूना बिन्त हारिस उमरतुलकज़ा के साल (ज़ीकअ़दा 7 हिजरी) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ौजियत में आईं मुकामे सरिफ़ में 61 हिजरी में इन्तिकाल किया और वहीं दफ़न हुईं।

नबी-ए-करीम सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम की तमाम बीवियों ने अपनी अपनी जगह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी रिफ़ाक़त से तक़वियत और तसकीन का फर्ज अंजाम दिया और नबूवत के फैसले हुए और तरह तरह के कामों को पूरा करने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी के निजी दायरे में मदद पहुंचाई। अज़वाजे मुतह्रात में से दो हज़रत खदीजा और उम्मुल मसाकीन ज़ैनब का इन्तिकाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में हुआ। बक़िया: आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद हयात रहीं।

अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तौर तरीक़े को क़यामत तक आने वालों के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत और दीन की ताबेदारी के लिए नमूना क़रार दिया। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुख़्तलिफ अंदाज और तरीके इंसानी ज़िंदगी में पेश आने वाले हालात में रहबरी का ज़रिया रखते हैं, किसी को ज़ौजियत में लेने के सिलसिले में किस तरह की सूरतें पेश आ सकती हैं उन सूरतों में क्या किया जा सकता है वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नमूनों से हासिल होगा।

आम इन्सान के लिए अगर एक से ज़ियादा बीवी है तो दोनों के दरमियान पूरा इंसाफ बरतना कितना मुश्किल होता है। इसके बजाए सबके साथ बराबरी का मामला हो, तन्हा यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बहुत बड़ा मुजाहिदा था। जिसको देख कर आदमी के लिए जिसकी एक से ज़ियादा बीवियाँ हों नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उसवा (आदर्श) किस क़दर हिम्मत और हौसला दिलाने वाला है। इस तरीक़े से बीवी के मामले में जो मुन्सिफ़ाना और इंसानी जज़्बे को इख़्तियार करने की तल्क़ीन है इसके लिए वह रहनुमाई करने वाला नमूना है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ाहिदाना ज़िंदगी, संयमी जीवन और मोहतात सीरत व अख़लाक़ और दुन्यावी राहत व आराम से बेरग़बती का तरीक़ा इख़्तियार कर रखा था। इसमें अपनी बीवियों को भी शरीक रखा। उनसे फरमाया अगर वह आराम चाहती हैं तो आप उनको अपनी ज़ौजियत (निकाह) से आज़ाद कर सकते हैं और इसके लिए उनको ग़ौर करने का मौक़ा दिया लेकिन उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रह कर तकलीफ़ में ज़िन्दगी गुज़ारने को तरजीह (प्रमुखता) दी और आपके साथ एकता और सहयोग के साथ समय गुज़ारा और उत्कृष्ट आचरण रखने वाले कुनबे का सबूत दिया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद–

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत खदीजा रज़ि0 की रिफाकत 25 साल रही। 15 साल नबूवत से पहले और 10 साल नबूवत के बाद। इस दरमियान में उनसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कई औलादें हुईं। साहबज़ादे हज़रत क़ासिम तय्यब ताहिर और हज़रत अब्दुल्ला हुए, जो अपने बचपन की उम्र में इन्तिक़ाल कर गये और चार साहबज़ादियाँ हुईं, जिनमें सबसे बड़ी जैनब रज़ि0 हुई जो नबूवत से 10 साल पहले पैदा हुईं। उनकी शादी अबुल आस बिन रबी बिन लक़ीत से हुई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी ही में सन् 8 हिजरी में इन्तिक़ाल हुआ। उनसे एक बेटी उमामा हुई और एक बेटे अली हुए[1]।

आप सल्लल्लाहु अलैहि

1. अलबिदाया वन–निहाया 5/307

दम लेते हैं। मुसलमान प्रायः बड़े ज़ौक शौक से तरावीह पढ़ते हैं, और कभी इसमें एक घण्टा, कभी दो घण्टे और कुरआन मजीद पढ़ने की मात्रानुसार कभी तीन तीन, चार चार घण्टे लगा देते हैं।

पिछले पहर उठ कर सहरी खाना-

रात को सुबह सादिक[1] से पूर्व (रोज़े की ताकत पैदा करने और ताकि भूख, प्यास अधिक न सताय) कुछ खा लिया जाता है। इसको शरीअत की परिभाषानुसार "सहूर" तथा हिन्दुस्तान में "सहरी" कहते हैं यह सुन्नत भी है और इसके प्रति प्रेरणा भी दी गई है। इसमें अपनी अपनी रुचि तथा अपनी आवश्यकतानुसार कमी अथवा ज़ियादती भी होती है तथा खाद्य सामग्री में विभिन्नता भी होती है। सुबह सादिक़ आरम्भ होने पर खान पान समाप्त हो जाता है और प्रायः लोग कुछ पहले ही खाना पीना बन्द कर देना उचित समझते हैं।

रोज़ा -

अब रोज़ा आरम्भ हो गया, अब सूर्यास्त तक किसी भी प्रकार का खान पान एवं काम सम्बन्धी क्रियाएं सर्वथा वर्जित हो गईं।

रोज़ा और व्रत अथवा उपवास में अन्तर-

इस्लामी रोज़ा, हिन्दुस्तान के प्रचलित धार्मिक व्रत के दिनों तथा भोजन त्याग देने की उन विधियों से जो स्वास्थ्य रक्षा तथा चिकित्सा सम्बन्धी आवश्यकताओं हेतु अपनाई जाती है, सर्वथा भिन्न है। इस्लामी रोज़े में किसी भी प्रकार का खान पान यहां तक कि दवा का भी हलक़ से उतारना और निगलना वर्जित है। आहार तथा खाने पीने में भी किसी प्रकार की कोई विशेषता नहीं कि अन्न अवैध हो और फल वैध या नींबू अथवा नमक के साथ पानी या केवल पानी का सेवन वैध हो। इस प्रकार की किसी भी वस्तु का सेवन करने से रोज़ा टूट जाता है, और अगर इस प्रकार की क्रिया जान बूझ कर की गई है तो उसके जुर्माने के तौर पर निरन्तर साठ रोज़े रखना पड़ेंगे हाँ यदि किसी व्यक्ति को इसका ध्यान नहीं रहा कि वह रोज़े से है और भूल से कुछ खा पी गया तो इससे रोज़ा नहीं जायेगा[2]।

रमजान में इबादत के प्रति रुचि तथा धार्मिक क्रियाओं में व्यस्तता-

इस महीने में सामन्य रूप से लोगों की उपासना के प्रति रुचि तथा धार्मिक कार्यों में तत्परता एवं लीनता की मात्रा में वृद्धि हो जाती है। प्रत्येक रोज़े दार कुरआन मजीद की थोड़ी बहुत तिलावत (पाठ) करना आवश्यक समझता है। उपकार, अनुग्रह, सदभावना, संवेदना एवं सहानुभूति की भावना भी जागरूक और पहले से विद्यमान होती है तो प्रगतिशील एवं उन्नतिशील हो जाती है।

---

1. इसको नमाज़ के विषय में वर्णित किय जा चुका है।
2. रोज़े में इन्जक्शन लेना वैध है।

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

रमज़ान के आने से मस्जिदों की शोभा में अभिवृद्धि तथा मुसलमान घरों में बहार आ जाती है–

रमज़ान का चाँद दिखाई देने के साथ ही रमज़ान, उसकी ईबादतें (उपासनाएं) और उसके विशेष अध्यात्मिक कार्य एवं क्रियाएं तथा आलोकमय वातावरण का शुभारम्भ हो जाता है। मुसलमानों के घरों तथा बस्तियों में जीवन की नई लहर विदित होने लगती है। यह महीना यद्यपि धैर्य एवं आत्म–संयम, गंभीरता एवं सहिष्णुता और अनेक असाधारण प्रतिबन्धों एवं सावधानियों का सन्देश लेकर आता है परन्तु सामन्य रूप से इसका स्वागत हर्ष एवं उल्लास बल्कि स्नेहपूर्ण भाव से किया जाता है, और धार्मिक अभिरुचि तथा कुरआन मजीद से प्रेम तथा अनुराग रखने वालों के लिए तो मानों बहार आ जाती है। घरों में चहल पहल और मस्जिदों की शोभा में अभिवृद्धि हो जाती है। प्रतिदिन इशा की नमाज़ पढ़ कर सब अपने अपने घर चले जाते थे और अपने कामों में लग जाते थे परन्तु रमज़ान की चाँद रात्रि में कुछ और ही बात विद्यमान होती है। आज कुछ नमाज़ियों में भी वृद्धि दिखाई देती है और नमाज़ में भी। नमाज़ियों में वृद्धि इस कारण, कि बहुत से मुसलमान जो मकान या दुकान में नमाज़ पढ़ लेते थे, और देर सबेर का भी उनको कुछ अधिक ध्यान न था, आज चाक चौबन्द तथा हश्शास बश्शास मस्जिद में दिखाई दे रहे हैं।

नमाज़ तरावीह तथा कुरआन मजीद का अखण्ड पाठ–

और नमाज़ में अभिवृद्धि यह कि इशा की दो सुन्नतों के बाद आज 'तरावीह' की नमाज़ होगी। तरावीह दो दो करके बीस रकअतों की नमाज़ होती है। हर दो रकअत के बाद सलाम फेरा जाता है। इसमें कुरआन शरीफ क्रमबद्ध रूप से पढ़ा जाता है। कहीं प्रति दिन एक पारा[1], कहीं दो पारे और कहीं पाँच तथा कहीं दस। तरावीह में कुरआन मजीद पूरा समाप्त किया जाता है। कदाचित ही कोई ऐसा असाहसी मुसलमान होगा जो सम्पूर्ण कुरआन मजीद सुनने के बजाय कुछ सूरतों के सुनने को पर्याप्त समझे। ऐसे ऐसे उत्कृष्ट हाफ़िज़ भी हैं जो दस दस और पन्द्रह–पन्द्रह पारे भी एक रात में सुना देते हैं, और कुछ तो रात भर में सम्पूर्ण कुरआन मजीद पढ़ कर ही

---

1. सम्पूर्ण कुरआन मजीद को 30 खण्डों में विभाजित किया गया है, प्रत्येक खण्ड को 'पारा' कहते हैं अनु0

से भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातिमा और दोनों साहबज़ादिगान को बहुत महब्बत के अल्फ़ाज़ से नवाज़ा[1]। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे महब्बत सिर्फ नवासों की तरह नहीं बल्कि पोतों की तरह करते थे और वह दोनों भी बहुत सआदतमंद और सालेहतरीन सीरत व अख़लाक़ के हुए और उनसे वही नमूना ज़ाहिर हुआ जो एक सर्वश्रेष्ठ नबी के नवासों और पोतों से ज़ाहिर होता है।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह सब साहबज़ादियाँ और साहबज़ादे हज़रत खदीजा रज़ि0 के बतन शरीफ से थें[2]। अलावा एक साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम के जो हिजरत के कई साल बाद हज़रत मारिया क़िबतिया रज़ि0 के आप की ज़ौजियत में आने पर पैदा हुए लेकिन वह भी बचपने ही में इन्तिक़ाल कर गये। ये हज़रत खदीजा की वफात के कई साल बाद पैदा हुए थें[3]।

हज़रत फातिमा रज़ि0 की ज़िन्दगी भी ज़ियादा लम्बी नहीं हुई वह अपने वालिद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयात के सिर्फ 6 माह बाद इन्तिक़ाल कर गयीं और अपने दोनों बेटों को यतीम छोड़ कर गईं जिनमें एक की उम्र उस वक्त 7 साल और दूसरे की सिर्फ 8 साल थी। वह अपने नामवर वालिद की संरक्षता में बढ़े और जवान हुए उनके वालिद हज़रत अली हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पहले खलीफ़ा हज़रत अबूबक्र रज़ि0 से उम्र में 27 साल छोटे थे और दूसरे खलीफ़ा हज़रत उमर रज़ि0 से 17 साल और तीसरे खलीफ़ा हज़रत उस्मान रज़ि0 से भी उम्र में छोटे थे और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दामाद होने की सिफत में हज़रत उस्मान रज़ि0 उनके शरीक थे इस तौर पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दूसरी बेटियाँ एक के बाद दूसरी उनके निकाह में आयी थीं। इस तरह वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोहरे दामाद हुए। हज़रत अली रज़ि0 उनके बाद खलीफ़ा हुए। इस तरह यह चार खलीफ़ा खुलफा–ए–राशिदीन कहलाए और उन चारों ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सीखा हुआ तरीक–ए–हुकूमत और इमारत अच्छे तरीके से इख्तियार किया और दुन्या के सामने उसको नमूने के तौर पर पेश किया। इन चारों की खिलाफ़त का ज़माना लगभग तीस साल रहा।

---

1. अलबिदाया वन–निहाया 5/308, सुबुलुलहुदा वररशाद फ़ी सीरते खैरिल इबाद 11/36
2. सुबुलुल हुदा वररशाद फ़ी सीरते खैरिल इबाद, लेखक मुहम्मद बिन यूसुफ, सालिही शामी 11/55–82
3. अलबिदाया वन–निहाया 5/309, अनसाबुल अशराफ़ 448–453

❖❖❖

क़िस्मत

न घबरा जोशे तूफां से
ख़ुदा पर छोड़ कश्ती को
पहुँच ही जायेंगे ऐ दिल
अगर क़िस्मत में साहिल है

व सल्लम की दूसरी साहबज़ादी हज़रत रुक़य्या रज़ि0 हुईं जो नबूवत से 8 साल पहले पैदा हुईं और उनकी शादी अबू लहब के बेटे उतबा से हुई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबूवत मिलने पर अबू लहब ने जो दुश्मनी इख़्तियार की उसी सम्बन्ध में उसने ज़बरदस्ती तलाक़ दिलवा दी। फिर उनकी शादी हज़रत उस्मान रज़ि0 से हुई और उनका भी इन्तिक़ाल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयात ही में हिजरत के दूसरे साल हुआ[1]।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तीसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि0 हुईं उनकी पैदाईश भी नबूवत से पहले हुई। उनकी शादी अबू लहब के दूसरे बेटे उतैबा से हुई और उनसे भी अबू लहब ने अपने बेटे से तलाक़ दिलवा दी और जब हिजरत के दूसरे साल हज़रत रुकय्या का इन्तिकाल हुआ और हज़रत उस्मान रज़ि0 के यहां गुंजाईश निकल आयी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी शादी भी उनसे कर दी। इस तरह हज़रत उस्मान रज़ि0 आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो साहबज़ादियों के शौहर हुए। इसी बिना पर उनको "जुननूरैन" का खिताब हासिल हुआ। उन साहबज़ादी का भी इन्तिक़ाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तैयबा में ही हो गया यह सन् 9 हिजरी का वाक़िया है[2]।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चौथी साहबज़ादी हज़रत फातिमा रज़ि0 हुईं जो नबूवत के 5 साल पहले पैदा हुईं और उनकी शादी हज़रत अली रज़ि0 से हुई। यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सबसे छोटी साहबज़ादी थीं और उनसे ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नस्ल चली। दो बेटे हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि0 हुए। यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयात तय्यबा में रहीं, अलबत्ता आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के छः माह बाद इन्तिक़ाल कर गयीं उनका साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ तमाम उम्र रहा क्योंकि शादी से पहले तो रहा ही था शादी के बाद भी रहा क्योंकि हज़रत अली रज़ि0 आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ही रहते थे। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भी साथ रहा, उसकी वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़क़त और महब्बत उनको बहुत मिली और ख़ुसूसी तरबियत हुई। फिर इसी तअल्लुक से उनके साहबज़ादों हज़रत हसन व हज़रत हुसैन ने भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़क़त व तरबियत का बड़ा हिस्सा पाया और इसी के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको आख़िरत की फिक्र और दुन्या से बेतअल्लुक़ी का आदी बनाया और इस तअल्लुक

---

1. सुबुलुल हुदा वररशाद फ़ी सीरते खैरिल इबाद, लेखक मुहम्मद बिन यूसुफ, सालिही शामी 11/29–32
2. सुबुलुल हुदा वररशाद फ़ी सीरते खैरिल इबाद, लेखक मुहम्मद बिन यूसुफ, सालिही शामी 11/33–35

इस कारण कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस महीने को संवेदना एवं सहानुभूति का महीना कहा है और इसमें एक पैसा उचित कार्यों में व्यय करने से 70 पैसों का सवाब मिलता है।

रोज़े की दशा में जो बातें निषिद्ध हैं-

रोज़ा केवल पुण्यात्मक तथा वैध क्रियाओं का पालन करना मात्र नहीं अपितु कुछ बातों से बचने तथा न करने की भी क्रिया है। इसमें व्यर्थ एवं अनावश्यक बातें, झूठ, मिथ्या, परोक्ष निन्दा एवं वे समस्त दुष्कार्य जो पहले से ही निन्दित थे, और अधिक निकृष्ट हो जाते हैं। एक हदीस शरीफ़ में स्पष्ट रूप से अवगत करा दिया गया है कि जिसने रोज़े की हालत में झूट बोलना और और मिथ्याचरण करना न छोड़ा तो अल्लाह को इस बात की कदापि आवश्यकता नहीं कि आदमी अपना खाना पीना छोड़ दे।

❖❖❖

शम्सी और क़मरी.....

ईस्वी सन् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जन्म से आरम्भ होता है जब कि चाँद के महीनों का सन् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मक्का से मदीना तय्यिबा हिजरत से आरम्भ होता है और यह हिजरी सन् कहलाता है। विश्व के अधिकांश देशों में अंग्रेज़ी सन, महीनों और तारीखों का प्रचलन है। हिजरी (चाँद के महीनों) का प्रचलन मेरे ज्ञान से केवल सऊदी अरब में होता है।

ईस्वी महीनों की तारीख़ रात के 12 बजे के पश्चात आरम्भ होती है जब कि हिजरी महीनों की तारीख़ सूर्यास्त से आरम्भ होती है, अधिकांश मुसलमान अपने निजी लेखों में हिजरी तारीखें लिखने का प्रचलन करते हैं, परन्तु बड़े खेद की बात है कि बहुत से उच्च शिक्षा प्राप्त तथा उच्च पदों पर नियुक्त मुसलमान ऐसे भी हैं जो यह भी नहीं बता सकते कि इस समय चाँद का कौन सा महीना है और कौन सी तारीख है। मुसलमानों को चाहिए कि वह चाँद की तारीखों की जानकारी रखें कि उनकी यह दीनी ज़रूरत है, वह अपने लेखों में जहां अंग्रेजी तारीख लिखते हैं वहीं अनुकूल लिख कर चाँद की तारीख भी लिख दिया करें जैसे 4 फरवरी 2015 ई0 14 रबीउस्सानी 1436 हि0 निः सन्देह सूर्य तथा चन्द्रमा दोनों हमारे लिए बड़ा महत्व रखते हैं सूर्य के प्रकाश और उसकी गर्मी के बिना जीवन असम्भव है परन्तु उनके महत्व को देख कर उसको पूजना बड़ी भूल है, पवित्र कुर्आन में आदेश है कि "सूर्य तथा चन्द्रमा को नमन मत करो अपितु नमन करो उस अल्लाह को जिसने उन को अस्तित्व प्रदान किया।

पवित्र कुर्आन में सूर्य (अश्शम्स) नाम की एक सूरत है तो चन्द्रमा (अल क़मर) नाम की भी एक सूरे है। अल्लाह का लाख लाख शुक्र है कि उसने हमारे लाभ के लिए सूर्य तथा चन्द्रमा उत्पन्न किये।

❖❖❖

तबलीगे नबवी सल्ल० उसके उसूल और उसकी कामयाबी के असबाब

(हुजूर सल्ल० के धर्म प्रसारण के नियम और उनकी सफलता के कारण)

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी —अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह०

दावत बिल कुर्आन–

कुर्आन पाक इस्लाम के वाद और तर्क दोनों का संग्रह है और वही उसके मज़हब का सहीफा व ग्रंथ है, खुद आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दूसरे मुबल्लिग सहाब–ए–किराम रज़ि० भी तबलीगो दावत में सिर्फ कुर्आन की सूरतें पढ़ कर सुनाते थे और जहाँ उनको इस का मौका मिल जाता वहाँ उसकी तासीर व प्रभाव अपना काम कर जाती थी, और यह फर्ज खुद कुर्आन ने अपना आप करार दिया था, इसकी तबलीग के लिए जिहाद की ज़रूरत थी मगर इस जिहाद का हथियार लोहे की तलवार नहीं बल्कि कुर्आन की तलवार थी, जिसके वार का रोकना ढाल और खोद के बस की बात न थी, अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर को इसी तलवार (कुर्आन) से जिहाद का आदेश दिया और फरमाया– ऐ पैग़म्बर! आप काफ़िरों की इताअत मत कीजिए और इस (कुर्आन) के जरिये उनके साथ पूरे ज़ोर से जिहाद कीजिए।

(सूरे फुर्कान 25:52)

इस पैग़ामे इलाही के ज़मीन में उतरने की गरज ही यह थी कि वह खुदा के भूले हुए बंदों को उनका अह्द व वादा याद दिलाये, फरमाया– अनुवादः ऐ पैग़म्बर! आप उन लोगों को याद दहानी कराइये जो मेरी वअ़ीद (सज़ा देने का वादा) से डरते हों, कुर्आन रहमते आलम का उमूमी प्याम है और यही उसके नाज़िल होने का अस्ल मकसद है, फरमायाः अनुवाद– बहुत बरकत वाला है वह जिसने हक़ व बातिल में फर्क करने वाली किताब अपने बंदे पर नाज़िल की ताकि वह तमाम दुन्या जहाँ को खबरदार व होशियार करे।

यही कुर्आन इस्लाम की ताकत और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अस्ली हथियार था जिसकी काट (वार) ने कभी खता न की।

इस्लाम के प्रचार की खुदाई तरतीब–

अरब में सिर्फ तीन क़ौमें थीं जिनका इस्लाम लाना गोया प्रायद्वीप अरब का इस्लाम लाना था, यानी मुश्रिकीन, यहूद और नसारा, मुश्रिकीने अरब का केन्द्र खान–ए–काबा था और उनके मज़हबी रहनुमा कुरैश थे, यहूद का केन्द्र स्थान मदीना और ख़ैबर था, नसारा और मजूस शाम और यमन के आस पास में फैले हुए थे।

इस आधार पर करीब से करीब के लिहाज से इस्लाम के प्रचार व प्रसार की कुदरती तरतीब यह थी कि कुरैश और कुफ़्फ़ारे मक्का को पहले दावते तौहीद दी जाती, फिर यहूद को इस्लाम के दायरे में लाने

की कोशिश होती, उसके बाद नसारा और मजूस को दावत दी जाती, अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी तरतीब के साथ इस्लाम की तबलीग की और इसी आधार पर कुर्आन मजीद का दावती उसलूब विभिन्न नज़र आता है, तमाम मक्की सूरतों के सम्बोधित कुफ्फार मक्का थे इसलिए उनमें बुत परस्ती की निन्दा, तौहीद की प्रेरणा, कुदरत की अनोखी बातों का बयान, अज़ाबे इलाही का डर और कुरैश के सरदारों की मुखालिफत के जवाब के अलावा कुछ नहीं, लेकिन जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्के से हिजरत करके मदीना मुनव्वरा तशरीफ लाये तो यहूद से वास्ता पड़ा और अब कुर्आन मजीद की सम्बोधन शैली बदल गई, चुनांचे शुरु की मदनी सूरतें जियादा तर यहूद की मज़हबी तारीख, उनकी धार्मिक पुस्तकों में रद्दो बदल, उनकी अखलाकी कमज़ोरियों और बनी इस्राईल के किस्सों पर आधारित हैं, सबसे अंत में नसारा की बारी आई और फ़तहे मक्का के बाद अरब के कबीलों के वुफूद के बाद नजरान के ईसाईयों का वफद आया, उसी ज़माने में सूर–ए–आले इमरान नाज़िल हुई, जिसमें नसारा का जिक्र है–

मजूसी अरब में बहुत कम थे बहरीन और यमन में और कम तादाद में पाये जाते थे, वह भी ईरानी नस्ल के थे, खालिस अरब न थे, इसलिए कुर्आन मजीद ने खास तौर से किसी सूरः में उनसे खिताब नहीं किया है, अलबत्ता जगह जगह मुनासिब जगहों पर उनका नाम लिया है और उनके आस्थाओं का खण्डन किया है और उनको दो खुदाओं की पूजा के बजाये एक खुदा के इबादत यानी तौहीद की दावत दी है।

कुबूले इस्लाम के लिए क्या चीज़ आवश्यक थी–

अगरचि यूरोप का यह आम दावा है कि अरब में इस्लाम केवल तलवार के ज़ोर से फैला, लेकिन शुरु में जिन लोगों और जिन कबीलों ने इस्लाम कबूल किया, उनके गुणों को देख लेने के बाद साफ़ साबित होता है कि इस्लाम अपने लिए सिर्फ असर कुबूल करने वाले दिल का ख्वाहिशमंद था और उसमें अपना असर डाल देता था, चुनांचे नबी की बेसत के प्रारंभिक काल में जिन लोगों ने इस्लाम कबूल किया, वह वही थे जो नेक स्वभाव वाले, ईमानदार, हक पसंद और उसके मुतलाशी थे और जो नबूवत की खूबियों व विशेषताओं से वाक़िफ थे, और जो अतीतकाल के आसमानी मज़ाहिब से कुछ न कुछ आगाह थे और सामाजिकता और संस्कृति से वाकिफ थे, इन औसाफ के हामिल लोगों के अलावा जिन क़बाइल और आबादियों ने इस्लाम के कबूल करने में अग्रसरता दिखाई वह भी वही थीं जिनमें यह विशेषतायें पाई जाती थीं, अरब के दो विभिन्न भागों जुनूबी व शुमाली में सब से ज़ियादा इस्लाम को कामयाबी अरब के दक्षिणी भाग यानी यमन, ओमान बहरीन, यमामा में हुई और उत्तरी भाग में मदीना मुनव्वरा और उसके आस पास के इलाक़ों में हुई, क्योंकि वह सांस्कृतिक अवस्था से दुन्या की प्रमुख

सभ्य क़ौमों ईरानियों और रूमियों से प्रभावित थे और मज़हबी अवस्था से यहूदियों और ईसाईयों से उनका मेल जोल था, मदीना वासी भी यहूदियों की सभ्यता व सांस्कृतिक रिवायात और रस्मों रिवाज से बहुत कुछ प्रभावित थे।

इस्लाम को अरबों से जिस कद्र लड़ाईयाँ पेश आयीं, वह सब नजद और हिजाज़ में पेश आयीं लेकिन मुसलमानों की कोई विराट फौज मदीना, यमन, यमामा और बहरीन को फतह करने के लिए नहीं भेजी गयी, अंसार मदीना ने खुद मक्के में आकर इस्लाम को लब्बैक कहा, मदीना के आस पास के क़बाइल में से कबीलये ''गिफार'' ने खुद मक्के मुकर्रमा आकर कुरैश की तलवार की आग में खड़े हो कर लाइलाहा इल्लल्लाह पढ़ा, यमन से कबीलये ''दौस'' के लोगों ने खुद मक्क–ए–मुअ़ज्जमा पहुंच कर ईमान की दौलत हासिल की और उसके सरदार ने अपना क़िला इस्लाम की पनाह के लिए पेश किया, ''अशअर'' का कबीला भी उसी ज़माने में गाइबाना (परेक्षतः) इस्लाम लाया, हमदान का कबीला हजरत अली रज़ि0 की दावत पर एक दिन में मुसलमान हो गया।

अम्मान का भी यही हाल हुआ, वहाँ भी इस्लाम ने सिर्फ अपनी तबलीगी कोशिशों के ज़रिये से इक़तिदार हासिल किया, एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अरब के किसी कबीले के पास एक आदमी भेजा, वह लोग उसके साथ सख्ती से पेश आये और उसके साथ आघात किया, उसने आ कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह वाकिया बयान किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर अह्ले अम्मान होते तो तुम को ना गालियां देते न मारते।

यमामा के सरदार समामा क़ैद हो कर मदीना आये, वहां आजाद कर दिये गये मगर मदीने की मस्जिद में जो जलवा उन्होंने देखा, अपनी जाहिरी माद्दी आज़ादी के बाद भी उसकी नूरानी ज़ंजीर से उन्होंने रिहाई न पाई, खुद बखुद मुसलमान हो गये और अपने कबीले में जा कर इस्लाम के प्रचारक बन गये और आखिर खून का एक कतरा गिरे बिना इस्लाम ने वहां अकसरियत (बहुसंख्यता) हासिल कर ली।

देहातों में सबसे पहले ''जवासी'' नामी गांव ने तौहीद की आवाज़ पर लब्बैक कहा जो बहरीन के करीब का इलाक़ा था, इस गांव के वासी मक्का की फतह से पहले इस्लाम कबूल कर चुके थे, अतः मस्जिदे नबवी के बाद अरब के देहातों में सबसे पहला जुमा उसी गांव में पढ़ा गया बारगाहे नबूवत में अरब के गिरोह अगरचि फ़तहे मक्का के बाद हाजिर हुए लेकिन बहरीन के वासियों ने इसमें सबसे पहले पहल की, चुनांचे 5 हिजरी में सबसे पहला गिरोह जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ वह कबील–ए–अब्दे क़ैस का था जो बहरीन में रह रहा था।

यमन वालों की गिनती अगरचे मुहाजिरीने अव्वलीन में नहीं किया जाता लेकिन जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत का हाल मालूम हुआ, उसी वक़्त हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि0

शेष पृष्ठ.....27.... पर

आ़लमे इस्लाम पर मग़रिब का तसल्लुत अस्बाब व नताइज़

–मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह नबीयुल उम्मी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आखिरी पैग़म्बर मुक़र्रर फरमाने के बाद यह भी तै फरमा दिया कि इन्सानी दस्तूरे हयात अब मक़ामी और महदूद जमानी दायरे तक महदूद न रहते हुए, आलमी सतह का, और दाइमी व अबदी दस्तूरे हयात होगा, वह इस तरीक़े की रु से इन्सानी जिन्दगी के मुख़्तलिफ़ पहलुओं के बदलते रहने वाले हालात से मुताबक़त भी रखेगा, इसकी बुन्याद पर इसमें दो अहम खुसूसियतें पाई जाती हैं, एक तवस्सुत व एअ़तिदाल की खुसूसियत जिसकी बिना पर वह सब के लिए क़ाबिले अमल है, और दूसरी खुसूसियत इसमें सहूलत का पहलू है, ताकि उस पर अमल करने में दुशवारी न हो, और यह दोनों खुसूसियतें इस दस्तूरे हयात में एक तरफ़ जामईयत पैदा करने वाली और दूसरी तरफ उसके दवाम का ज़रीआ बनें, और इस जामईयत की खास बात यह है कि यह दस्तूर इन्सान की दीनी और दुन्यावी दोनों ज़रूरतों का हामिल है, मसलन यही देखिये कि कुर्आन मजीद में जो इस दस्तूरे हयात का मस्दरे अव्वल है, बुन्यादी हिदायात में जगह–जगह नमाज़ और गरीबों की मदद की तलक़ीन मिलती है, नमाज़ यानी अपने रब के सामने अपनी अब्दीयत का इज़हार और ज़कात यानी गरीबुल हाल की मदद और उसकी दुन्यावी परेशानी को दूर करने का एहतिमाम, एक तरफ़ अपने रब की रजा के हुसूल के लिए इबादती अमल और दूसरी तरफ़ इन्सानी अ़रूरत के तक़ाज़ों का लिहाज़ और इजाज़त, इस तरह इसमें इस्लामी तरीक–ए–हयात के मुख़्तलिफ पहलुओं में जो इबादाती हों या मुआशरती हों, परवरदिगारे आ़लम की बन्दगी के साथ दुन्यावी ज़िन्दगी की ज़रूरतों और ज़रूरी तकाजों के हल इख्तियार करने की तरफ तवज्जुह दिलाई गई है, जिसकी बिना पर शरीअते इस्लामी जिसमें इंसानी ज़िन्दगी के तक़ाजों और ज़रूरतों का पूरा पूरा लिहाज़ रखा गया है, निहायत आला और इन्सानी जरूरत के लाइक़ क़ानूने हयात की हैसियत की मालिक बन गई है। लेकिन इन्सान जब आला सतह की मख़लूक़ होने की अक़दार को अहमीयत देता है तो इस दस्तूर के ज़रीये आला मख़्लूक़ के मकामे बुलन्द तक पहुंच जाता है और जब इन्सानी खुसूसीयात न रखने वाली मख़लूकात के अन्दर पाई जाने वाली अ़दमे जिम्मेदारी और नफ्सानियत तक महदूद तर्ज़े ज़िन्दगी को अपनी सीरत के लिए नमूना समझ लेता है तो ज़िन्दगी की पस्त तरीन सतह पर उतर आता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क़ब्ल जो

अंबिया आये वह उमूमन इलाकाई दाइरे के अन्दर आये और बनी इस्राईल के अंबिया उमूमन बनी इस्राईल के नस्ली दायरे के अन्दर मबऊस हुए, गालिबन वजह यह हुई कि उस वक्त दुन्या के मुख़्तलिफ इलाकों के दरमियान राबिते के वसाइल न थे, लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वक्त से दुन्या में इलाक़ाई महदूदियत ख़त्म हो कर आ़लिमी सतह पर रब्त अ़मल में आने लगा, इस्लाम की फुतूहात जज़ीरतुल अ़रब से निकल कर एक तरफ मशरिक़ी इलाकों तक पहुंची तो दूसरी तरफ मगरिब के किनारों तक पहुंची और इस तरह मुख़्तलिफ़ इलाकों, मुख़्तलिफ हिस्सों और मुख़्तलिफ़ तहज़ीबों को उसने अपने दाइरे मे ले लिया, इसी के साथ पयामे इलाही कुर्आने करीम की हिफ़ाज़त का फैसला होने से इस्लामी दावत में इमतिदादे ज़माने के असर से बिगाड़ के हावी होने का खतरा वैसा नहीं रहा जैसा पहले था, एक इलाक़ा या एक नस्ल में इमतिदादे ज़माने के सबब अगर बिगाड़ हावी हुआ तो उसकी जगह दूसरी नस्ल उसका बदल बनी, और उसने इस्लाम की अस्लीयत को बाकी रखा और इस तरह इस्लाम एक तरफ आ़लमी पैमाने का दूसरी तरफ दाइमी हैसियत का मज़हब होने में कामयाब रहा, अलबत्ता इससे इनाद इख्तियार करने वाले बदलते रहे, अव्वल दौर में शिर्क के अलमबरदार हल्के—फिर अकी—दए—तस्लीस के शिद्दत पसन्द हल्के इस्लाम के दुश्मन बने और फिर यह यहूदी और ईसाई दोनों के मुतअस्सिब हल्के आपसी तआ़उन के साथ और साजिशी अंदाज से इस्लाम के मुश्तरक दुशमन बने, उनकी साज़िशें सैहूनीयत, मासूनीयत, सामराजि इस्तिशराक़ और तखरीबी तन्जीमों के तहत काम करती रहीं, उनसे बचाव और अपने दीन के दिफाअ़ के लिए दुशमनों के साज़िशी तरीकों को जानने की ज़रूरत रही और यह ज़रूरत बराबर बाकी है, उसके लिए अहले दानिश का तसनीफ़ व तहरीर और उसके वासाइल के ज़रीये खिदमत अंजाम देने की ज़रूरत बराबर रही है, इस काम में इस्लाम के अपनी अस्ली हालत में महफ़ूज रहने की जो ज़मानत रब्बुल आलमीन की तरफ से मिली है उससे बड़ी मदद हासिल रही, चुनांचि जो भी खुले ज़ेहन, साफ दिल और तअ़स्सुब से बुलन्द हो कर इस्लाम का मुतालआ़ करता है और उसकी अस्ली हालत से वाकिफ़ होता है तो वह उसका हमनवा हो जाता है जिसकी मिसालें बराबर सामने आ रही हैं।

इन्सानी तारीख़ में इन्सानों की ज़िन्दगी में दो तरह की खुसूसियात बराबर पाई जाती रही हैं, और उनके दरमियान कश मकश भी जारी रही है, इसी लेहाज से यह बात भी सामने आती रही है कि आला इन्सानी अक़्दार के पसन्द करने वाले पाबन्दे शरीअ़त लोग भी होते रहे हैं और इन्सान की खिदमत के लिए पैदा की गई मख़लूक़ात गैर जिम्मेदाराना और सिर्फ नफ्स पसन्द ज़िंदगी की नक़्ल करने वाले जाहिलीयत की तहजीब के अलमबरदार भी रहे हैं, और दोनों तबकों

के दरमियान कश मकश बरपा होती रही है, कुर्आन मजीद में इस तरह के दोनों तबकों की तरफ वाज़ेह इशारा सू–रए–वत्तीन में देखा जा सकता है, मौजूदा अहद में इन दोनों तबकात के दरमियान कश मकश इस सूरत में बहुत बढ़ गई है कि मग़रिबी इन्सान जाहिलीयत पसन्दी की बिना पर अपनी अक़्ल और इल्म के असर अंगेज़ ज़रीयों को इस कश मकश को बढ़ाने और अपनी बरतरी और ग़लबे के हुसूल के लिए इस्तेमाल कर रहा है, इसके लिए वह दो इन्सानी ज़रीयों को ख़ास तौर पर इस्तेमाल कर रहा है, एक माली ताक़त का ज़रीआ और दूसरा ज़रीआ मीडिया की ताक़त का है इस तरह वह माल के ज़रीये कम मायगी के शिकार लोगों को अपना ताबेअ़ और तरफदार बना रहा है, दूसरी तरफ मीडिया के ज़रीये लोगों के जोहनों को ज़िंदगी के सरसब्ज बागों को खिज़ां गज़ीदा और अज़कारे रफ़्ता दिखाता है और खारदार जंगलों को गुदाज़ और राहत रसां जाहिर करता है और अपनी अ़क्ली महारत से इस्लामी खूबियों को दाग़दार बना के पेश करता है, और यह बात इधर कई सदियों से बहुत ज़ोर व शोर से चल रही है और उसने अपने तर्जे फिक्र की दर्सगाहों के मुस्तफीदीन के खासे बड़े तबके को मुतअस्सिर भी कर दिया है, माल और वासइले ताक़त वाले लोग इस्तेमारी राह से यह काम अंजाम देते हैं और इल्म व अक़्ल के अस्हाब इस्तिशराकी जराये से यह काम अंजाम दे रहे हैं।

इस तमाम कश मशक की वज़ह यह है कि इन्सानी ज़िन्दगी की फिक्र व तसव्वुर जैसा होता है उसी के मुताबिक असरअन्दाज़ होता है, कोई भी तरी–कए–जिन्दगी हो वह अपनी मुतअय्यन फिक्र रखता है वह उसी फिक्र के तहत अमल करता है, इस्लामी फिक्र में मुसलमान दुन्यावी ज़िन्दगी को एक उबूरी अहद समझता है जिसके बाद अस्ल ज़िन्दगी का अहद हासिल होने पर यकीन रखता है जो आखिरत का अहद कहलाता है, दुन्यावी जिन्दगी में किये गये आमाल के नताइज उसमें ज़ाहिर होगें वफादारे इस्लाम आखिरत के नताइज को दुन्यावी ज़िन्दगी में पेश आने वाले नताइज के मुकाबले में अव्वलीयत देता है, जब कि मगरिबी फ़िक्र वाला दुन्यावी ज़िन्दगी ही को सब कुछ मानता है और सिर्फ उसी के आमाल और उनके नताइज को तस्लीम करता है, और आखिरत के तसव्वुर को दुन्यावी तसव्वुर के लिए रुकावट मानता है, और बाइसे जरर समझता है, जबकि इसलामी तसव्वुर आखिरत की फिक्र के साथ साथ ज़िन्दगी के मुनासिब तक़ाजों को भी तस्लीम करता है, और उनको उनका जाइज़ हक़ देना सही समझता है।

इस तरह इस्लामी तसव्वुरे हयात, मग़रिबी तसव्वुरे हयात से ज़िन्दगी के जाइज तक़ाजों की हद तक मुत्तफिक़ और उसके इंकारे आखिरत के तसव्वुर के बरखिलाफ़ है और मग़रिब का लादीनी तसव्वुर इस इख्तिलाफ की बिना पर इस्लामी तसव्वुर के मुखालिफ फिक्र का हामिल है, और आखिरत के तसव्वुर

को मिटाना चाहता है, दोनों तसव्वुराते हयात का यह इख्तिलाफ मग़रिबी मुफक्किरीन के इस्लाम के खिलाफ जिद्दोजुहद पर लगाए हुए है, और उनकी दर्सगाहों में तालीम हासिल करने वालों और उनकी इल्मी और फिक्री मजलिसों में शरीके महफिल होने वालों पर असर अन्दाज़ होता रहा है और हो रहा है, लिहाज़ा हमारे इस्लामी फ़िक्र रखने वाले दानिशवरों का फ़र्ज बनता है कि हम उनका मुक़ाबला और उसके जो मुज़िर असरात हैं उनको दूर करने की कोशिश करें।

खुशी की बात यह है कि इस काम को अल्हम्दु लिल्लाह असहाबे ईमान और उनके मुख़तलिफ़ इदारों के ज़रीये अंजाम देने की कोशिश कुछ कुछ मिलती है, इस वक्त मजकूरा उन्वान के तहत एक किताब हमारे एक ज़हीन नौजवान उस्ताद मौलवी मुहम्मद वसीक़ नदवी की तरफ से शाऐअ़ हुई है जिसमें उन्होंने अच्छे इल्मी अन्दाज़ में इस काम को अंजाम दिया है, इस उर्दू किताब में मसीहीयत और यहूदीयत के हामिलीन की अदावत व तअस्सुब, ईसाई मिशनरी, साम्राज, इस्तिशराक़, मासूनियत और आ़लमी सैहूनीयत की शातिराना चालों को ज़ाहिर किया गया है। इस्लाम मुख़ालिफ़ अफ्कार व नजरियात के ख़तरनाक पहलुओं और मुस्लिम दुशमन तहरीकों के अज़ाइम और मन्सूबों पर रौशनी डाली गई है, इस्लाम और मुसलमानों पर दहशतगरदी, इन्तिहा पसन्दी, बुन्याद परस्ती और तशद्दुद के इलज़ामात का जवाब देते हुए यूरोप के ज़ुल्म व सफ़्फ़ाकी, बरबरीयत व दरिन्दगी, क़त्ल व ग़ारतगरी, इन्तिहा पसन्दी और दहशत गर्दी को हक़ाइक़ व वाकिआ़त की रोशनी में साबित किया गया है, और इस्लाम के रौशन मुस्तकबिल की तरफ़ इशारा किया गया है, दर्जज़ेल इक्तिबासात से इसका ब खूबी अन्दाज़ा होता है।

"दर हक़ीक़त यूरोप को ख़ौफ़ इस्लाम से नहीं, उसकी मुअस्सिर व रवादाराना तालीमात, तसखीरी सलाहीयत और दिलों को फ़त्ह कर लेने वाली कूवत से है, तारीख के मुताले से वह मुसलमानों के कुर्आन व सुन्नत से मज़बूत तअ़ल्लुक, खुदा और रसूल की बे पनाह महब्बत, इस्लामी तालीमात पर उनके एतिमाद व यक़ीन और राहे खुदा में जाँसिपारी व जाँनिसारी के बे मिसाल जज़्बे का अन्दाज़ा लगा चुका है उसे मालूम हो गया है कि मुसलमान इस्लाम के तहफ़्फ़ुज़ की ख़ातिर जान व माल इज़्ज़त व मताअ़ हर किस्म की कुर्बानी पेश कर सकते हैं लेकिन उसके दामन पर कोई बदनुमा धब्बा बरदाश्त नहीं कर सकते, इस्लाम के एवज़ उन्हें कोई सौदा मंजूर नहीं होगा"।

लारेन्स ब्राउन (Law—rence Braun) कहता है, "जब तक मुसलमानों में इख्तिलाफ़ और इन्तिशार रहेगा उस वक्त तक उनकी कोई हैसियत नहीं होगी और न उनका कोई वज़न होगा, लिहाजा यह ज़रूरी है कि अरब और मुसलमान एक दूसरे से अलग रहें, उनमें इत्तिहाद क़ाइम न होने पाये ताकि उन्हें कोई ताक़त व कुव्वत हासिल न हो सके

और दुन्या के नक़्शे में इनकी कोई हैसियत न रहे"

पादरी साइमन कहता है—

"इस्लामी वहदत ही मुसलमान क़ौमों की आमाजगाह है और उसी से मुसलमान यूरोपीयन तसल्लुत से खलासी हासिल कर सकते हैं, दूसरी तरफ ईसाई मिशनरी ही इस वहदत को पाश पाश कर सकती है, लिहाजा हमें चाहिये कि हम ईसाई मिशनरी के ज़रीये मुसलमानों का रुख इस्लामी वहदत से फेर दें"।

इस्तिशराक़ के साम्राजी रुख़ पर रोशनी डालते हुए लिखा है, "उन्नीसवीं सदी ई0 के आखिर में इस्तिशराक़ ने साम्राजी रुख़ इख़्तियार कर लिया, ब अलफ़ाज़े दीगर, इस्तिशराक़ ने मुनज्ज़म साम्राजी नेटवर्क की हैसीयत इख़्तियार कर ली और मग़रिबी साम्राज का अहम बाजू बन गया और अमरीकी बाला दस्ती के कियाम में इस इल्मी तहरीक़ ने कलीदी रोल अदा किया।

इसी वजह से अमरीकी यूनीवर्सिटियाँ मुस्तशरिकीन की फौज की फौज तैयार कर रही हैं, बाज़ मुआसिर मुस्तशरिकीन इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ अपने तहकीकी मक़ालात (thesis) के जरिये मुअस्सिर सियासी रोल अदा कर रहे हैं उनमें सरे फेहरिस्त अमरीकी यहूदी मुस्तशरिक बरनार्ड लोईस है उसीने तहज़ीबी टकराव का नज़रिया पेश किया था। जिसको अमरीकी मुफक्किर Samuel P. Huntington ने रवाज दिया, और अमरीकी साम्राज को इस्लाम और मुसलमानों को खत्म करने का मशवरा दिया।"

खास तौर से अमरीकी इस्तिशराक, मुआसिर अमरीकी मुस्तशरिकीन इसराईल के कयाम से लेकर आज तक अरबी खित्ते के हालात पर खुसूसी तवज्जुह दे रहे हैं यह मुस्तशरिकीन इस खित्ते में अमरीकी सियासत के तकाजों को और ज़रूरियात के पेशे नज़र ग़ौर करके अमरीकी हुकूमत को मालूमात बहम पहुंचाते हैं और उनकी रौशनी में अमरीकी इन्तिजामिया इक्दामात करती है।

अमरीकी इस्तिशराक़ में इसराईल पर खुसूसी तवज्जुह दी जाती है क्योंकि खित्ते में इसराईल अमरीकी अ़जाइम को बरूएकार लाने में अहम रोल अदा कर रहा है,

"तलमूद के मुतालआ़ और ज़ाइजे से साफ जाहिर होता है कि तल्मूद का बुन्यादी फलसफ़ा पूरी नौअ़े इन्सानी को यहूदियों की खिदमत के लिए मुसख्खर करना, तमाम तहजीबों का खातिमा और दीगर सहीफे आस्मानी को मन्सूख करा देना है ताकि इन्सानीयत दुशमन फल्सफे को पूरी ज़मीन पर राइज़ किया जा सके और मम्लकते इसराईल को तहफ़्फ़ुज़ और बक़ा हासिल हो सके।

तल्मूदी तालीमात के चन्द नमूनेः—

० हर यहूदी पर लाज़िम है कि वह अपनी कौम के लिए इक्तिदार और हुकूमत को बाकी रखने के लिए दूसरी तमाम क़ौमों को आगे बढ़ने से रोके और ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने से उनको बाज़ रखे।

० जानवर और इन्सान के दरमियान वही फ़र्क है जो यहूद और ग़ैर यहूद में फर्क़ है।

० ग़ैर यहूदियों में से नेक

लोगों का क़त्ल करना वाजिब है। और यहूदी पर यह हराम है कि वह किसी ग़ैर यहूदी को तबाही से बचाए या किसी ग़ार में गिरने से रोके, बल्कि उसको चाहिए कि जब वह (गैर यहूदी) ग़ार में गिर जाए तो ऊपर से मिट्टी डाल कर उसे बन्द कर दे।

० काफिरों में सबसे ज़ियादा खतरनाक मसीह और उसके मुत्तबिईन हैं।

० ग़ैर यहूदियों के साथ ज़िना जाइज है, ख्वाह वह मर्द हों या औरतें। और ऐसा करने वाले को कोई सज़ा नहीं होगी।

० जो यहूदी ख्वाब में अपनी माँ के साथ ज़िना करता है उसे हिक्मत मिलती है, जो अपनी मख्तूबा के साथ मुँह काला करता है वही पाबन्दे शरीअ़त होता है, जो ख्वाब में अपनी बहन के साथ ज़िना करता है उसे अक़्ल व दानाई की रोशनी मिलती है, और जो ख्वाब में अपने किसी रिश्तेदार की बीवी से ज़िना करता है उसे अबदी ज़िन्दगी नसीब होती है।

० यहूदी खातून को कोई हक़ नहीं कि वह अपने शौहर की इस बात की शिकायत करे कि वह उसके बिस्तर पर जिना करता है।

० हर यहूदी पर लाज़िम है कि वह दिन में तीन मरतबा ईसाइयों पर लानत भेजे और उनकी हलाक़त व बरबादी की दुआ करे।

० नसरानियों के यसूअ जहन्नम में हैं और उनकी माँ मरयम ने उनको फ़ौजी बान्दरा से ज़िना करके जना है सैहूनी इसको ज़रूरी करार देते हैं कि अरबों और मुसलमानों को बुराइयों में गर्क कर दिया जाए, इस मक्सद के लिए मुस्लिम मुल्कों में फह्हाशी के अड्डे काइम किये जाते हैं, अपनी औरतों को इस्तेमाल करते हैं और मुस्लिम आबादियों में ऐसे मुअ़ल्लिमीन और मुअल्लिमात भेजे जाते हैं जिनके ज़ेहन फासिद होते हैं। यह तलबा को बे राह रवी, अख़लाक़ी व जिन्सी अनारकी, बे हयाई और अख़लाक़ सोज हरकतों पर आमादा करते हैं।

ईसाई मुअर्रिखीन इस्टेफिन रन्सीमान, गोसताऊ लेबान, राबर्ट और काहिन आबूस ने एतिराफ किया है कि–

"ईसाइयों ने बैतुल मक्दिस में पनाहगुज़ीं मुसलमानों का इस तरह क़त्ले आम किया कि घोड़ों के पैर घुटनों तक खून में डूब गये, रिचर्ड ने उका शहर में 2700 मुस्लिम क़ैदियों को क़त्ल कर दिया जिनमें बच्चों और औरतों को भी क़त्ल कर दिया गया, बल्कि वह सड़कों पर घूम घूम कर मर्दों, नौजवानों, बच्चों और औरतों के पेट चाक करते थे, हर जगह लाश ही लाश नज़र आती थी और हमारी क़ौम के सफ़्फ़ाकों ने तकरीबन एक लाख मुसलमानों को क़त्ल कर दिया।

कठिन शब्दों के अर्थ-

उम्मी= जिसने किसी से पढ़ा न हो। अन्नबीयुल उम्मी= ऐसा नबी जिसने किसी से पढ़ा न हो। दाइमी= स्थाई दस्तूरे हयात= जीवन विधान। मुताबकत= अनुकूलता। दवाम= स्थायुत्व। अ़ब्दीयत= दास्ता। अक़्दार= नैतिक मूल्य उमूमन= साधारणतः। मबऊस = भेजा

गया, भेजा हुआ। इम्तिदादे जमाना= समय बीतना। मुन्हरिफ= फिर जाना।

अक़ी–दए–तस्लीस=तीन खुदा मानने का विश्वास। सैहूनीयत= यहूदीयत। तखरीबी= ध्वंसात्मक। कश मकश= संघर्ष। तबकात= श्रेणियां, वर्ग। जाहिलीयत पसन्दी= रूढ़वाद। असर अंगेज़=प्रभाव कारी। कममायगी= निर्धनता। खजाँ गज़ीदा= पतन शील, पत झड़ वाला। अज़कारे रफ़्ता= बेकार, व्यर्थ। मुस्तफीदीन= लाभ उठाने वाले।

इस्तिशराकी= मुसलमानों को बहकाने वाले मसीही विद्वानों की चाल। इस्तेअ़मारी= साम्राजी। उबूरी= सामयिक, बीत जाने वाला। ज़रर= हानि।

इस्तिशराक़= ईसाई विद्वानों के विषय में पूरा ज्ञान प्राप्त करके मुसलमानों को शंका में डालने का प्रयास करने वाला। सैहूनीयत= यहूदी आन्दोलन। मुख़ालिफ़ अफ़्कार= विरोधी विचार। इक्तिबासात= चयन। रवादाराना= उदार।

इन्तिशार= अव्यवस्था।

वहदत= एकत्व। आमाजगाह= ठिकाना। ख़लासी= छुटकारा। बाला दस्ती= अधिकार प्राप्त करना। तहरीक= आन्दोलन। जिन्सी अनार की= व्यभिचार फैलना। तसल्लुत= अधिपत्य।

❖❖❖

तब्लीगे़ नबवी.....

भी यमन से 52 आदमियों को लेकर मदीना की तरफ हिजरत के मकसद से रवाना हो गये, समुद्री सफर था, वह लोग कश्ती में सवार हुए तो मुखालिफ सिमत से चलने वाली हवा के झोंकों ने उसको "हब्शा" में पहुंचा दिया जो मुसलमानों की सबसे पहली हिजरत की जगह थी, वहां हजरत जाफर इब्ने अबी तालिब रज़ि0 से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें ठहरने का आदेश दिया है, तुम लोगों को भी यहीं ठहरना चाहिए, अतः वह लोग वहीं ठहर गये और फत्हे खैबर के ज़माने में मुहाजिरीन "हब्शा" के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुए।

यह हक़ीक़त है कि इस्लाम की राह में सबसे बड़ी रुकावट जिहालत और वहश्त और उसकी इशाअत की सबसे बड़ी प्रेरक चीज़ संस्कृति, सामाजिकता और अखलाक की बलंदी और आसमानी ग्रंथों और दूसरे धूर्मों से परिचय था, खुद कुर्आन मजीद ने उसको जाहिर किया है अनुवादः देहाती बदवी कुफ्र और निफाक़ में सबसे जियादा सख्त हैं और जियादा इसके अहल हैं कि वह उन अहकाम को न जाने जो खुदा ने अपने रसूल पर उतारे हैं और अल्लाह जानता है और हिकमत वाला है। (सूर–ए–तौबा 97/9) और भी इस प्रकार की आयतें हैं जो लोग देहातों से आ कर इस्लाम लाये थे और कुछ मसाइल सीख कर वापस चले जाते थे, उनसे जो बैअ़त लीं जाती थी उसका नाम "बैअते आराबी" था जो कम दर्जे की समझी जाती थी, इस बिना पर देहात में अलग थलग रहना सहाब–ए–किराम रज़ि0 के काल में मायूब (दूषित) समझा जाता था। बल्कि बाज़ लोग इसको धर्म परिवर्तन की अलामत समझते थे।

इहानते रसूल–बदतरीन जुर्म

(नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान निकृष्टतम अपराध)

–मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

पैरिस की घटना की आज कल हर ओर चर्चा है, वहाँ कुछ लोगों ने मआज अल्लाह एक कारटून के द्वारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान किया था जिस की प्रतिकृया में कुछ दीनदार मुस्लिम जियालों ने साहस करके उनका वध कर दिया था उन अपमान करने वाले कुकर्मियों की तो कोई निन्दा नहीं करता उल्टे उन इस्लामिक गौरव वाले जियालों की निन्दा पर लोग उतर आए हैं अपितु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान करने वालों के महा पाप तथा निकृष्टतम अपराध को हल्का करके पेश कर रहे हैं जिसकी प्रतिकृया में उनका वध हुआ। आज कल यूरोप और उसकी सभ्यता के गुलाम देशों में मत की स्वतंत्रता तथा कर्म की स्वतंत्रता की बड़ी चरचा है और उसका बड़ा जोर है, उसकी आड़ में बड़े से बड़ा अपराध कर लिया जाता है। यूरोप की माता पिता की स्वतंत्रता वाली सभ्यता उसको विनाश की सीमा तक पहुंचा रही है। शीघ्र ही यह देश अपने खोदे हुए गड्ढे में गिर कर इतिहास का एक भाग बन जायेंगे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान ऐसा अपराध है जिसकी क्षमा नहीं, ऐसे अपराधी को कोई मुसलमान क्षमा नहीं कर सकता, न ही उसके इस अपराध को सहन कर सकता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान करने वाले की सजा मौत है।

आश्चर्य है कि मुस्लिम लीडरों तथा स्वरचित उलमा ने चिल्ला चिल्ला कर, गला फाड़–फाड़ कर उन मुस्लिम जियालों की निन्दा की उनको न इसका भय हुआ कि उनके ईमान का क्या होगा और वह हश्र के मैदान में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क्या मुँह दिखायेंगे? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान करने वालों से सहानुभूति तथा उनको जो दण्ड दिया गया उसको ग़लत कहना, इतना बड़ा पाप है कि उसके प्रभाव से धरती फट जाये तो आश्चर्य की बात नहीं।

❖❖❖

इसको अवश्य पढ़ें

प्रिय पाठको! मंहगाई ने सच्चा राही का वार्षिक घाटा बहुत बढ़ा दिया है, उसको कम करने के लिए मई 2015 ई0 से "सच्चा राही" का वार्षिक सहयोग ₹ 200/- किया जाता है तथा एक अंक का मूल्य ₹ 18/-होगा। हमें आशा है कि आप इस वृद्धि को सहन करके अपने सच्चा राही को सहयोग देंगे। धन्यवाद

(सम्पादक)

शुक्रे इलाही की अहमियत और उसके तरीके

—प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी

कुर्आन मजीद में अल्लाह तआला का इरशाद है अनुवादः अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें और जियादा दूंगा और अगर ना शुक्री करोगे तो मेरा अ़ज़ाब दर्दनाक है (सुर—ए—इब्राहीमः7) यानी अल्लाह तआला ही का सब कुछ है सारी फौजें सारे जानवर सारी दुन्या जाहिर व बातिन सब अल्लाह के हाथ में है वह जिसको चाहे फना कर दे जिसको चाहे बाक़ी रखे, वह कभी कभी अपने मानने वालों को आज़माइशों में डाल कर दिखाता भी रहता है जिससे हम परेशान हो जाते हैं, इसीलिए अल्लाह ने फरमाया कि अगर तुम हमारा शुक्र अदा करोगे तो बाहर व अंदर हर तरह ठीक रहोगे।

शुक्र का पहला दर्जा—

अल्लाह का सबसे पहला शुक्रिया यह है कि हम मानें कि अल्लाह जात व सिफात दोनों एतिबार से पहला और एक है, कोई उसके साथ शरीक नहीं है, क्योंकि खुदा के साथ किसी को शरीक करना बगावत है, और आप समझ लीजिए जो बागी होता है उसके साथ क्या होता है? ऐसे ही अल्लाह ने फरमाया जो हमारा बागी होगा हम उसको माफ नहीं करेंगे, और उसके अलावा जो कुछ भी करेगा हम माफ कर सकते हैं, तो सबसे पहली ज़रूरी और अहम बात यह है कि हमारा अ़क़ीदा बिल्कुल दुरुस्त होना चाहिए, जैसे अल्लाह ने सूर—ए—आराफ की आयत 54 में फरमाया अनुवाद— सुन लो उसी के हाथ में है पैदा करना और निज़ाम चलाना, और चलाने में भी कोई शरीक नहीं है, पैदा भी उसने अकेले किया, आसमान व ज़मीन, पहाड़ समुद्र, खेती खलयान तमाम किस्म के जो जानवर हैं कीड़े मकोड़े हैं और बागात व जंगलात हैं खुद खुदा ने अकेले बनाया है और उसका कोई शरीक नहीं है।

और इसी लिए अल्लाह तआला भी बाज मर्तबा दिखाता भी रहता है कि डॉ0 भी हैरान रह जाता है कि एक दवा किसी को फायदा करती है और वही दूसरे को नुकसान, ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए है कि अल्लाह ही दवा में तासीर डालता है और वही ठीक करता है न कि डॉ0, अगर किसी ने यह समझ लिया कि डॉ0 भी ठीक कर लेता है तो समझ लो कि अक़ीदा पलट गया और खराब हो गया, और जब ऊपर वाले से ही कहेंगे तो अल्लाह तआला भी कहेंगे डॉ0 से कि सही दवा दो फिर मुआमला सही हो जायेगा इसलिए अल्लाह से मुआमला ठीक रखना चाहिए, सबसे पहली बात सबसे जरूरी बात जिससे जन्नत मिलेगी और हम दुन्या में कामयाब हो जायेंगे, वह यह कि हमारा अकीदा बिलकुल ठीन होना चाहिए।

दुन्या एक सवारी है, हम उसके सवार हैं—

उसके बाद यह समझना

चाहिए कि जो यह पढ़ा जाता है "दुन्या तुम्हारे लिए पैदा की गई है और तुम आखिरत के लिए पैदा किये गये हो" हम दुन्या के लिए पैदा नहीं किये गये हैं, लेकिन आज सोच फिक्र मुआमला सब बदल गया है दुन्या के एक कोने से दूसरे कोने तक हर जगह बस हाय रूपया हाय पैसा की सदा है इसके अलावा कुछ नहीं, अरे दुन्या को क्या समझा है आपने, यह तो एक सवारी है, उस पर आप सवार रहिए, लेकिन अगर कोई सवारी को अपने ऊपर सवार कर ले तो कैसा बेवकूफ बनेगा कि सवारी चलने के लिए है उस पर चलना चाहिए न कि अपने ऊपर सवार करना, लेकिन आदमी पर आज दुन्या सवार हो गयी है और जिस पर जितनी बड़ी दुन्या सवार है उतना ही वह परेशान होता है।

इस काल की सबसे भयंकर बीमारी दुन्या की महब्बत का दिलों में इस तरह घर कर जाना है कि लोग समझते हैं कि आखिरत कुछ है ही नहीं सिर्फ दुन्या ही सब कुछ है। इसीलिए हदीस शरीफ में आता है "दुन्या की महब्बत हर बीमारी व परेशानी की जड़ है" दूसरी हदीस में आता है कि "हर उम्मत का एक फितना है और मेरी उम्मत का फितना माल है" इन अहादीस का मंशा व मक्सद यह है कि दुन्या आपके पास हो, लेकिन उसका कन्ट्रोल आपके हाथ में हो, यानी महब्बत अल्लाह और उसके रसूल से हो, और दुन्या उसके हाथ में हो जैसे घोड़े की लगाम आपके हाथ में आ जाये तो देखते चले जाइये, ऐसे दुन्या हाथ में आ जाये तो चलते चले जाइये।

दुन्या की महब्बत खत्म करने का बेहतर तरीक़ा-

अल्लाह के रास्ते में खूब दिल खोल कर खर्च करने और देने से माल बढ़ता है घटता नहीं जो लोग समझते हैं कि ज़कात व अतीआ़ वगैरह देने से माल घटता है यह उनके दुन्या से ज़ियादा महब्बत व लगाव कि वजह से है, हाँ दो ही रूपया दे मगर खुश दिली से, जब यह होगा तो दुन्या की महब्बत खत्म हो जायेगी और आपकी सवारी बन जायेगी फिर आप जहाँ चाहें उसे ले जायें, लेकिन अगर आप सवारी अपने ऊपर सवार कर लेंगे तो कितनी दूर जायेंगे किलो दो किलो मीटर बस।

अमीरों को नेक काम करने के मौके ज़ियादा मिलते हैं-

हदीस में आता है कि कुछ कमज़ोर व गरीब सहाबा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और उन्होंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल हम लोग तो सुबहानल्लाह अल हम्दुलिल्लाह पढ़ते हैं नमाज़ रोजा रखते हैं, और यह पैसे वाले पैसे भी देते हैं, तो बहुत आगे बढ़ जा रहे हैं, तो आप ने फरमाया कि यह कलिमात पढ़ा करो "सुबहानल्लाहि वल हम्दुलिल्लाहि वलाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर" आगे बढ़ जाओगे, उन्होंने पढ़ना शुरु किया, अब जब अमीरों को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने भी पढ़ना शुरु कर दिया, फिर यह गरीब भागे हुए अल्लाह के रसूल की खिदमत में आये और कहा कि

शेष पृष्ठ.....36.... पर

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: अगर कोई मुसलमान नमाज़ में सू–रए–फातिहा और दूसरी सूरतें ज़बान चलाए बिना दिल ही दिल में पढ़े तो नमाज़ हो जायेगी या नहीं?

उत्तर: नमाज़ की नीयत दिल में की जा सकती है और ज़बान से भी अदा की जा सकती है मगर तकबीरे तहरीमा ज़बान से अदा करना फ़र्ज़ है अगर ज़बान से तक्बीरे तहरीमा "अल्लाहु अक्बर" न कहे तो नमाज़ न होगी, इसी प्रकार सू–रए–फातिहा और दूसरी सूरतें ज़बान चलाये बिना दिल ही दिल में पढ़ेंगे तो नमाज़ न होगी अलबत्ता खुदा न करे जबान में कोई मरज हो और ज़बान न चलाई जा सके तो दिल ही दिल में सू–रए–फातिहा और दूसरी सूरतें पढ़ लेने से नमाज़ हो जायेगी।

प्रश्न: एक शख्स की वफ़ात हुई उसके कोई औलाद नहीं है, बीवी ने इद्दत के बाद दूसरा निकाह कर लिया, बीवी को अपने वफात पाये हुए शौहर के तर्के में हिस्सा मिलेगा या नहीं?

उत्तर: दूसरा निकाह कर लेने से वह अपने वफात पाए हुए शौहर के तर्के से महरूम न होगी बल्कि उसके तर्के से चौथाई हिस्सा पाएगी।

(दुर्रे मुख्तार मअ़ रद्दे मुहतार: 529 / 10)

प्रश्न: एक सरकारी नौकर ग्रेज्वटी फार्म में अपनी बीवी का नाम लिख देता है, उस नौकर के वफात पाने के बाद, ग्रेज्वटी की रकम सिर्फ बीवी का हक होगा या दूसरे वर्सा का भी? उस रकम से मरने वाले नौकर का कर्ज अदा किया जा सकता है या नहीं?

उत्तर: ग्रेज्वटी फार्म में जो नाम लिखाया जाता है वह रकम वसूल करने के लिए होता है, ग्रेज्वटी या प्रावेडेण्ट फंड की रकम मरने वाले नौकर का तर्का होता है उस रकम से पहले मरने वाले का कर्ज अदा करेंगे और अगर बीवी का महर बाकी है तो उसे अदा करेंगे उसके बाद जो बच रहेगा उसको तमाम वरसा में शरीअत के मुताबिक तक्सीम करेंगे। उस रकम की सिर्फ बीवी हकदार नहीं हो सकती।

(रद्दे मुहतार: 493 / 10)

प्रश्न: जो पेनशन सरकारी नौकर के मरने के बाद उसकी बीवी को मिलती है, क्या उस पेनशन में मरने वाले नौकर के दूसरे वरसा का भी हक है?

उत्तर: मरने वाले सरकारी नौकर की बीवी को जो पेनशन मिलती है वह सरकारी वरदान है, वह उसकी बीवी ही का हक है, वह रकम मरने वाले का तर्का नहीं है इसलिए पेनशन की वह रकम वरसा में तक्सीम न होगी।

(रद्दे मुहतार 493 / 10)

प्रश्न: एक सरकारी नौकर

मुहलिक मरज (जान लेवा रोग) में मुबतला था उसको इलाज के लिए सरकार से अच्छी रकम मिली जो उसकी बीवी के कब्जे में आई, मरीज की वफात हो गई वह रकम खर्च न हुई अब उस रकम में तमाम वरसा का हक है या सिर्फ उसकी बीवी का?

उत्तर: सरकार से मिली हुई यह इम्दादी रकम मरीज की हुई उसके मरने पर यह बची हुई रकम तमाम वरसा में शरीअत के मुताबिक तक्सीम होगी, कब्जा कर लेने के सबब सिर्फ बीवी उसकी हकदार नहीं हो सकती।

(रद्दे मुहतार 493/10)

प्रश्न: एक शख्स एक इमारत का मालिक था उस इमारत के एक हिस्से में बीवी के साथ रहता था बाकी इमारत किराये पर उठाये हुए था, आखिर वक्त जिस हिस्से में रहता था उसको अपनी बीवी के हक में वसीयत लिख दी, उसकी वफात हो गई, वसीयत के मुताबिक वह हिस्सा बीवी को मिलेगा या नहीं और इमारत के किराये में तमाम वरसा का हक होगा या सिर्फ बीवी का?

उत्तर: बीवी के हक मे वसीयत मोतबर नहीं जब तक तमाम वरसा राजी न हों बीवी उस हिस्से को अकेले नहीं ले सकती उसमें तमाम वरसा का हक है, इमारत का किराया तमाम वरसा में शरीअत के मुताबिक तक्सीम होगा।

(रद्दे मुहतार 493/10)

नोटः ऐसी सूरत में अगर बीवी के रहने का कोई ठिकाना न हो तो दूसरे वरसा को चाहिए कि वह हिस्सा मरहूम की बीवी को दे कर सवाब हासिल करें।

प्रश्न: एक शख्स के कई लड़के थे उसने सब की शादियां कर दीं सिर्फ एक लड़के की शादी नहीं कर सका था कि उसकी वफात हो गई, अब मरहूम के माले मतरूका से उस लड़के की शादी का खर्च निकाला जा सकता है या नहीं?

उत्तर: बाप ने अपनी ज़िन्दगी में जिन लड़कों की शादी कर दी उन पर एहसान किया बाप के मरने के बाद उसका तर्का तमाम वरसा में शरीअत के मुताबिक तक्सीम होगा, तर्के से गैर शादी शुदा लड़के की शादी का खर्च नहीं निकाला जा सकता।

(रद्दे मुहतार 493/10)

नोटः जिन भाईयों की शादियां बाप ने कर दी थीं उनको सोचना चाहिए कि उनके बापने उनके साथ जो एहसान किया उससे उनका एक भाई महरूम रहा इसलिए सब भाई, उस भाई की शादी में उसकी मदद करें।

प्रश्न: एक शख्स ने बरसहा बरस अपने माल की जकात नहीं अदा की, उसकी वफात हो गई अब वह माल वरसा का हक होगा या नहीं? क्या वरसा पर उस माल की पिछली जकात अदा करना वाजिब होगी या नहीं?

शेष पृष्ठ .....36..पर

लेखों तथा भाषणों की असभ्य शैली आधुनिक काल में सामाजिक विकार का मुख्य कारण

—मौ0 सय्यिद मु0 वाजेह रशीद हसनी नदवी

आधुनिक काल में धन बाहुल्य के साथ मीडिया, तथा प्रकाशन एवं प्रसारण की सरलता ने हर लेखक तथा वक्ता को लिखने तथा बोलने के अच्छे अवसर उपलब्ध कर दिये हैं। आगे बढ़ जाने की होड़ में जीवन को उच्तर स्तर पर ले जाने के प्रयासों ने हर शिक्षित जन को भांति भांति का लिट्रेचर पढ़ने पर तत्पर कर दिया है जिससे वह अपने ज्ञान के वृद्धि के साथ साथ अपनी समस्याओं को भुला सके, इस कारण पत्रिकाओं, समाचार पत्रों तथा नाविलों आदि की मांग बहुत बढ़ रही है। प्रणाम स्वरूप इस काल में हर प्रकार के विकृत तथा शुद्ध, सभ्य, मनोरंजक, सांसारिक तथा धार्मिक ज्ञान वर्धक तथा भावुक, एवं विवेक और आभास को जागृत करने वाला हर प्रकार का लिट्रेचर बाज़ार में उपलब्ध है।

हर व्यक्ति अपने मापदण्ड तथा रुचि के अनुकूल उसका चयन कर सकता है, ट्रेन में, बस में, विमान में भी समय बिताने के लिए किसी पुस्तक अथवा पित्रका मल्टी मीडिया मोबाइल एवं टेबलेट का साथ रखना सभ्यता का प्रतीक जाना जाता है। पुस्तकाध्यन के रुचि में वृद्धि तथा लेखन तत्व के प्राप्ति के लिए बहुत से व्यक्ति गत पुस्तकालय, वाचनालय और एकेडमियां स्थापित हो गई हैं जहाँ वैज्ञानिक तथा धार्मिक के लेख एवं पुस्तकें परियाप्त मात्रा में उपलब्ध हैं, जो चिन्तन तथा दृष्टिकोंण को संवारते और बिगाड़ते भी हैं, जो मानव को उच्च स्तर पर भी ले जाते हैं तथा आचार हीन भी बना देते हैं जो नैतिक मूल्यों का निर्माण भी करते हैं तथा उनको ध्वस्त भी कर देते हैं। जो मनुष्य को उग्रवादी तथा आतंकी और कुरु स्वभावी पर भी उभारती हैं और अच्छा स्वभाव भी सिखाती हैं। यह पुस्तकें तथा पत्रिकायें सड़कों, रेलवे स्टेशनों और बस स्टैण्ड के बुक इस्टालों से प्राप्त की जा सकतीं हैं और यह पुस्तकें, लघु कहानियां, पत्रिकायें, मैगज़ीन, जासूसी नाविल, यात्रा दैनिकी तथा वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक, शोध आदि हाकरों द्वारा प्राप्त की जा सकती हैं, पढ़ने की ऐसी आदत हो गई है कि कुछ लोगों को तो सोने से पहले कोई मार धाड़ वाला नाविल पढ़े बिना नींद ही नहीं आती, अध्ययन की इस असाधारण रुचि से प्रकाशन तथा प्रसारण वाले जो भव्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं उनको ऐस

लेखकों की आवश्यकता पड़ती है जो ऐसे लेख लिखें जो मन को मोह लें तथा बाज़ार में उनको स्वीकृत प्राप्त हो। और उनको हाथों हाथ लिया जाय ताकि उनके एडिशन पर एडिशन निकलते जायें, अब बहुत से लिखने वाले ऐसे लेख, ऐसे नाविल और ऐसी लघु कहानियां लिखते हैं जो पढ़ने वालों के मनों को अपनी ओर खींच लें, इस प्रकार इस काल में पुस्तकों का लिखना तथा उनका प्रकाशन एवं प्रसारण वित्तीय लाभ का साधन बन गया है।

पूर्व काल में लेखक गण अपने नियमों तथा आदर्शों की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहूति तक दे दिया करते थे परन्तु अपने नैतिक नियमों का सौदा नहीं करते थे बहुत से नेताओं तथा लीडरों को अपने नियमों पर जमें रहने के दण्ड में आग में जला दिया गया परन्तु वह अपने आदर्श नियमों पर जमे रहे वह लेखक सदैव अपने देश तथा अपनी मिल्लत के लाभ और उनका सम्मान सुरक्षित रखने के लिए तत्पर रहा करते थे। ऐसे लेखकों की एक बड़ी संख्या ऐसी रही है जिनके लेख उनके जीवन में प्रकाशित न हो सके परन्तु उन्होंने अपना सत्य प्रकट करके संतोष प्राप्त किया किन्तु इस काल के जीवन के हर मैदान में भौतिक वाद और धन प्राप्त की होड़ का दौर दौरा है और हर कथन तथा कर्म का आधार राजनीतिक एवं व्यतिगत हित बन गया है। सत्य के समक्ष असत्य का बोल बाला है। कुछ लेखक तो किसी बड़े व्यक्ति अथवा संस्था की लेखा परीक्षा करना और उस पर आरोप लगाना अपना अधिकार जानते हैं। चाहे स्वयं वह कितने ही विकृत हों। लिखने बोलने की स्वतंत्रता तथा प्रकाशन एवं प्रसारण के साधनों विशेष कर मीडिया के आधुनिक साधनों ने इस कार्य को सरल बना दिया है। भाषणों तथा लेखों के इस कुप्रयोग ने समाज में चिन्तन भ्रष्टता और विस्मयता तथा व्याकुलता को बहुत बढ़ा दिया है। आश्चर्य तो उस समय होता है। जब कोई लेखक वास्तविकता को बिल्कुल पलट देता है। कुछ लेखकों के लेखों का रिकार्ड अगर एकत्र किया जाये तो आश्चर्यजनक विचारों का उथल पुथल दृष्टिगोचर होगा गोया पत्रकारों की दृष्टि में हर व्यक्ति दोषारोपित दिखता है जिस प्रकार इलेक्शन में हर प्रत्याशी दोषी नज़र आता है जिसका कारण ये होता है कि हर प्रत्याशी अपने विरोधी प्रत्याशी को दोषारोपित ठहराता है तथा जन साधारण में उसके सत्य, असत्य आरोपों को उछालता है अन्ततः वोटर इस नतीजे पर पहुंचता है कि सभी प्रत्याशी विश्वासघाती तथा दोषी हैं।

आभासों तथा भावनाओं के प्रकटीकरण के

उक्त साधनों के अतिरिक्त इन्टरनेट और सोशल मीडिया, फेसबुक आदि ने हर व्यक्ति को अपनी बात कहने का अवसर प्राप्त कर दिया है, शिक्षित, अशिक्षित, बड़े, बूढ़े, बच्चे जवान अपितु हर मनुष्य को अपनी बात कहने और दूसरों की बातें जानने का सम्पूर्ण अवसर उलब्ध है, इस अत्याधिक स्वतंत्रता के कारण ऐसी बातें सामने आ रही हैं जिनसे दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुंचती है, या दूसरों के राजनीतिक दृष्टिकोण तथा विचारों से टकराव होता है या दूसरों के धार्मिक क़ौमी या सत्ता सम्बन्धित मान्यताओं से टकराव होता है अपना मत प्रकट करने की यह स्वतंत्रता, संघर्ष तथा मतभेद का कारण बन रही है परिणाम स्वरूप कभी कभी रक्तपाति टकराव तथा साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठते हैं।

बहर हाल इस काल में ग्रन्थ रचना तथा पत्रकारिता एक व्यवसाय होकर रह गया है जब कि यह बड़ी ज़िम्मेदारी का कार्य था और उसके लिए शोध, खोज तथा निष्ठिता की आवश्यकता थी परन्तु इस समय यह उच्च कार्य कुविचार तथा मान्सिक व्याकुलता का कारण बन गया है यह रुचि बहुत ही (आंशकित) है। इसलिए कि विकृत पुस्तकें, पत्रिकाएं, समाचार पत्र संग्राहक हथियारों से कम नहीं इसलिए कि यह सब मानव मस्तिष्क के निर्माण का काम करते हैं और मस्तिष्क ही वह नेता है जो मानव को अस्त्र शस्त्र के प्रयोग की शुद्ध विद्धि बताता है तो जब तक उसके साथ उच्च नियम उच्य उद्देश्य और शुद्ध नेतृत्व का श्रेष्ठ तत्व न होगा वह लोगों में रक्त पात तथा पारस्परिक सत्रुता के बीज बोता रहेगा जैसा कि उसके प्रभाव इस समय प्रकट हो रहे हैं।

लिखना और बोलना उस व्यक्ति के लिए बड़ा महत्व रखता है जो मुसलमान है और क़ियामत के दिन के हिसाबो किताब पर ईमान रखता है इसलिए कि मुसलमान का विश्वास है कि उस दिन हाथ पाँव गवाही देंगे और ज़बाने गूंगी हो जायेंगी और हर व्यक्ति को उसके किये का बदला दिया जायेगा। ज़बान से निकली हुई हर ग़लत बात पर पकड़ होगी लिखने वाला जो चाहे लिखता रहे और बोलने वाला जो चाहे बोलता रहे परन्तु यह जान ले कि अच्छे या बुरे लिखने बोलने का बदला जल्द मिलने वाला है अल्लाह की पकड़ से उसको कोई शक्ति बचा नहीं सकती।

कुछ लेखक तथा वक्ता लोक प्रियता प्राप्त करने के लिए जनता में भड़काऊ भाषड़ देते तथा उत्तेजित लेख लिखते हैं वह यह नहीं सोचते कि उनका लेख या उनका भाषड़ क्या प्रतिक्रिया पैदा करेगा और उसका क्या परिणाम निकलेगा उन्होंने अपने

विचार को एक बिकने वाली सामग्री बना ली है वह अपनी लोक प्रियता पर गर्व करते हैं लेकिन उनको यह वास्तविकता भुलाना नहीं चाहिए कि वह जो कुछ लिखते या बोलते हैं वह अल्लाह के दफ्तर में रिकार्ड हो रहा है उसके रिकार्ड करने वाले अल्लाह के फिरिश्ते हैं जो छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी बातें लिख कर सुरक्षित कर रहे हैं और क़ियामत के दिन पूरी फाइल प्रस्तुत कर देंगे जिसके विषय में पवित्र कुर्आन में आया है "कोई छोटी बड़ी चीज़ उसने ऐसी नहीं छोड़ी जो शुमार न की हो, और वह अपना सब किया धरा मौजूद पाएंगे"।

शुक्रे इलाही की.....

या रसूलुल्लाहअमीर भाईयों को मालूम हो गया वह भी पढ़ने लगे, वह फिर हम से आगे बढ़ जायेंगे, तो आपने फरमाया यह तो अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसको चाहता है देता है मालूम हुआ कि पैसों को अहमीयत दी जाती है, लेकिन पैसा पैर पर हो सर पर न हो तो जो दुन्या को सर पर रखे या दुन्या को सर में रखे दोनों बातें गलत हैं, बल्कि उसको बिल्कुल जैसे साइकल के पैडिल पर पैर रखते हैं वैसे ही रखते चले जाइये, बढ़ते चले जायेंगे, यभ भी फरमाया है कि ऐसे लोग बहुत कम होते हैं।

दौलत पर अगर शुक्र न हो–

हदीस में आता हे कि एक जगह आपने फरमाया "वह लोग बहुत घाटे में हैं काबे के रब की कसम, हज़रत अबू जर रज़ि0 बैठे हुए थे कहा या रसूलुल्लाह मेरे माँ–बाप आप पर कुर्बान, कौन लोग हैं जो घाटे में होंगे? तो आपने फरमाया जिनके पास मालो दौलत बहुत है और फिर आपने फरमाया सिवाये उन माल वालों के जो दाहिने लुटाऐं, बायें लुटाऐं, आगे लुटाऐं, पीछे लुटाऐं फिर आपने फरमाया ऐसे लोग बहुत कम होंगे। अल्लाह हम सबको माल पर शुक्र अदा करने की तौफीक अता फरमाये।

आमीन।

आपके प्रश्नों के उत्तर.....

उत्तर: ज़कात दिये बिन जो माल छोड़ कर कोई शख्स वफात पा गया वह माल उसके वरसा का हक है अगर मरने वाले ने आखिर वक्त वसीयत की कि मेरे माल से ज़कात अदा कर दी जाये तो उसके तिहाई माल से उसकी पिछली ज़कात अदा की जायेगी।

(रद्दे मुहतार 536/5)

प्रश्न: एक शख्स हाइड्रोसील का मरीज़ है, वह हज़ के दौरान एहराम की हालत में नीचे लंगोट बांधने पर मजबूर है क्या उस पर दम वाजिब होगा?

उत्तर: उज़्र (आपत्ति) की वजह से लंगोट बांधना जाइज़ है और उज़्र के बिना मकरूह है मगर उस पर कोई जज़ा वाजिब नहीं है, नैकर पहनना बहर हाल नाजाइज़ है और उस पर सिले हुए कपड़े की जज़ा वाजिब है।

❖❖❖

मधु मक्खी

—राशिदा नूरी

मधु मक्खियां बड़ी परिश्रमी होती हैं। ये अत्यन्त कठोर परिश्रम करके अपने छत्ते का निर्माण करती हैं। फुलवारियों, बाग़—बग़ीचों आदि के रंग—बिरंगे फूलों और फलों से मकरन्द चूस—चूसकर लाती हैं और छत्ते में मधु के रूप में एकत्र करती हैं। मधु बहुत ही गुणकारी, लाभदायक और मधुर पदार्थ है। अनेक रोगों में इसका इस्तेमाल दवा के रूप में किया जाता है। बच्चों को तो इसका रसास्वादन माँ की गोद में ही करा दिया जाता है। हमारे देश में मधु मक्खियों की मुख्यता 3 प्रजातियां पाई जाती हैं—

1. सारंग मधुमक्खियाँ
2. भारतीय मधुमक्खियाँ
4. भुनगा मधुमक्खियाँ

आइए, अब इनके बारे में विस्तार से जानें—

1. **सारंग मधुमक्खियाँ**— ये मधुमक्खियाँ सबसे बड़े आकार की होती हैं। ये पेड़ों पर या घरों के छज्जों के नीचे बहुत बड़ा छत्ता बनातीं हैं और अधिक मात्रा में मधु संचय करती हैं। इनके एक छत्ते में 5 से 10 किलो ग्राम तक मधु होता है। इस प्रजाति की मधुमक्खियों को स्थान—परिवर्तन करना बहुत पसन्द है। इसलिए ये कभी यहाँ तो कभी वहाँ अपने छत्ते बनाती रहती हैं। ये बड़े क्रोधी स्वभाव की होती हैं। इन्हें यदि कोई छेड़ता है तो ये उस पर आक्रमण कर देती हैं और कई कई किलोमीटर तक उसका पीछा करती हैं। कई बार तो ये अपने शत्रुओं को डंक मार—मार कर रोगी बना देती हैं। जिसे ये डंक मार देती हैं, उसका चेहरा फूलकर कुप्पा हो जाता है। कभी—कभी तो वह मर ही जाता है। इनको कोई भी छेड़े फिर जो भी मिले उस पर आक्रमण कर देती हैं।

2. **भारतीय मधुमक्खियाँ**— इस प्रजाति की मधुमक्खियों को 'खेरा' भी कहते हैं। ये सारंग से छोटी और भुनगा से बड़े आकार की होती हैं। छायादार, ठण्डे और अंधेरे स्थानों पर ये अपना छत्ता बनाती हैं। इन्हें कृत्रिम छत्ते बना कर भी पाला जाता है।

3. **भुनगा मधुमक्खियाँ**— ये मधु मक्खियाँ आकार में बहुत छोटी होती हैं। इनका मधु सबसे अच्छा माना जाता है। यह बहुत महंगे दामों पर बिकता है। भुनगा प्रजाति की मधुमक्ख्यों को पालना बहुत सरल है, परन्तु ये अल्प मात्रा में मधु संचय करती हैं। अतः इन्हें पालना आर्थिक दृष्टि से अधिक लाभदायक नहीं है इसलिए ये पाली नहीं जाती हैं। ये मैदानी क्षेत्रों में रहती हैं और पेड़ों की डालियों और घरों के छज्जों में अपना छत्ता बनाती हैं। शील प्रदेशों में रहना इन्हें पसन्द है।

मधुमक्खी का परिवार— मधुमक्खियाँ भी मनुष्य की भांति एक परिवार में रहती हैं। इनका पूरा परिवार एक छत्ते में ही रहता है। एक छत्ते में तीन हज़ार से चार हज़ार तक मुधुमक्खियाँ रहती हैं।

वर्गीकरण— प्रत्येक छत्ते में रहने वाली मधुमक्खियों को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है—

1. रानी मधुमक्खी 2. श्रमिक मधुमक्खी 3. नर मधुमक्खियाँ

1. **रानी मधुमक्खी**— प्रत्येक छत्ते में एक रानी मधुमक्खी होती है। रानी मक्खी को 'माता मधुमक्खी' भी कहा जाता है। यह दूसरी मधुमक्खियों की अपेक्षा बड़ी होती है। इसके पंख छोटे और पेट बड़ा होता है। यह पाँच—छह महीने ही जीवित रह पाती है।

रानी मधुमक्खी का मुख्य काम अण्डे देना है, यह प्रतिदिन

बड़ी संख्या में अण्डे देती है और अण्डों को छत्ते के रिक्त कोष्ठों में रखती जाती है। अण्डे से लारवा, लारवा से प्यूपा और प्यूपा से बच्चे बनते हैं। यह प्रक्रिया इक्कीस दिनों में पूरी होती है।

2. **श्रमिक मधुमक्खी**– छत्ते में सबसे ज्यादा श्रमिक मधुमक्खियाँ ही होती हैं। ये रानी मधुमक्खी और नर मधुमक्खियों से छोटी होती हैं और इनका पेट नुकीला, धारीदार तथा डंकयुक्त होता है। श्रमिक मधुमक्खियाँ भी मादा ही होती हैं। परन्तु ये केवल परिश्रम करती हैं, अंडे नहीं देतीं। इसलिए इन्हें श्रमिक मधुमक्खियाँ कहा जता है। छत्ते का निर्माण, उसकी मरम्मत और सफाई, शत्रुओं से छत्ते की सुरक्षा और बच्चों का पालन–पोषण, रानी मक्खी और नर मधुमक्खियों की सेवा करना श्रमिक मधुमक्खियों के प्रमुख कार्य हैं। श्रमिक मधुमक्खियाँ मधु और मोम का निर्माण करती हैं। ये फूलों और फलों से मकरन्द चूसकर और पराग खा कर मधु संचय थैली में एकत्र करती जाती हैं। लार मिलने से मकरन्द चीनी में परिवर्तित हो जाता है, जिसे श्रमिक मधुमक्खियाँ छत्तों में बने मधुकोष्ठों में एकत्र करके मोम से मधुकोष्ठों का द्वार बन्द करती जाती हैं।

कवि कहता है–

मधु की मक्खी के विषय में तुमको
देता हूँ मैं ज्ञान, श्रम से वह स्वयं
हैं खाती और देती हैं वह दान।
खींच कर फूलों से रस संग्रह
करती हैं मधु, मानव के वश में नहीं
है कि फूल से खींचे वह मधु।।

श्रमिक मधुमक्खियों का जीवनकाल पाँच–छह सप्ताह से लेकर पाँच–छह महीने तक होता है।

3. **नर मधुमक्खी**– पत्येक छत्ते में नर मधुमक्खियों की संख्या दो सौ से पाँच सौ तक होती है। नर मधुमक्खियाँ निखट्टू मधुमक्खियों को छत्ते से भगाती रहती हैं। हाँ, रानी मधुमक्खी किसी नर मधुमक्खी को साथ लेकर बाहर जाती है और वापस आ कर अण्डे देती है।

अल्लाह तआला ने मधुमक्खियों में परिश्रमशीलता, लगन, अनुशासन, संगठन, एकता, परोपकार और शिल्पकारिता के जो अदभुत गुण कूट–कूट कर भर दिए हैं, उनमें हमारे लिए बड़ी शिक्षा है। मधुमक्खियाँ जिस प्रकार निरन्तर कठोर परिश्रम करके, फूलों एवं फलों से मकरन्द और पराग एकत्र करके अमृत समान मधु तैयार करती हैं, उसी प्रकार अल्लाह का सच्चा, शिष्ट और सदाचारी बन्दा भी अच्छाइयों को ग्रहण करता और उन्हें पूर्ण मनोयोग से फैलाता और बुराइयों से बचता और बचाता है। वह अपने समाज को स्वच्छ, सुन्दर और सदाचार से परिपूर्ण बनाने का हर सम्भव प्रयास करता है।

पवित्र कुर्आन में मधुमक्खी के सम्बन्ध में कहा गया है:

"तुम्हारे रब ने मधुमक्खी के मन में यह बात डाल दी कि पहाड़ों और पेड़ों में और लोगों के बनाए हुए छतों में घर बनाये। फिर हर प्रकार के फल–फूलों से खुराक ले और अपने रब के समतल मार्गों पर चलती रहे। उसके पेट से विभिन्न रंगों का एक पेय (मधु) निकलता है, जिसमें लोगों के लिए औषधि है। निश्चय ही सोच विचार करने वालों के लिए इसमें एक बड़ी निशानी है" (16:68–69)

अन्तिम ईश दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शहद और कुरआन पाठ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है–

"दो स्वास्थ्यवर्द्धक वस्तुओं को अपने लिए अनिवार्य ठहरा लो। ये हैं शहद और कुरआन–पाठ।"

अर्थात शहद के सेवन से हम शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं और कुरआन पाठ से आत्मिक सुख–शान्ति।

हार्ट अटैक से बचाएंगे कद्दू बीज से बने उत्पाद

—सुनील कुमार

कद्दू के बीज से बना आटा, दलिया, सूप और बिस्कुट अब दिल के दौरे जैसी जानलेवा बीमारियों से बचाएंगे। औषधीय तत्वों से भरपूर कद्दू के बीज में प्रोटीन और डाइट्री फाइबर (आहारीय रेशा) की मात्रा काफी अधिक होती है जो कोलेस्ट्राल को कम रखने में मददगार है। शोध के बाद यह दावा नौणी वि0वि0 के खाद्य विज्ञान एवं तकनीकी विभाग के वैज्ञानिकों ने किया है।

आम लोगों तक इस बीज की पहुंच को आसान बनाने के लिए वैज्ञानिकों ने कद्दू के बीजों से आटा, दलिया, सूप और बिस्कुट तैयार किया है। "लो कॉस्ट वैल्यू एडिड प्रोडक्ट राइप पंपकिन" नामक प्रोजेक्ट के तहत नौणी के वैज्ञानिकों ने यह सफलता पाई है। अब बड़े पैमाने पर इसे सफल बनाने के लिए प्रदेश भर में कृषि विज्ञान केन्द्रों में किसानों को इसका प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण कब शुरु होगा, उत्पादों की कीमत क्या होगी, यह अभी तय नहीं है। वैज्ञानिकों के मुताबिक कद्दू एक ऐसी चीज है जिसके पत्ते से फल तक लगभग सभी भागों का प्रयोग खाने में किया जाता है।

इतनी डाइट्री फाइबर की जरूरत–

इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिन के मुताबिक 50 या इससे कम उम्र के पुरुषों को प्रतिदिन 38 ग्राम और इसी वर्ग की महिलाओं को 30 ग्राम डाइट्री फाइबर की ज़रूरत होती है। 50 वर्ष से अधिक की महिलाओं को 20 और पुरुषों को 25 ग्राम डाइट्री फाइबर की ज़रूरत होती है।

कद्दू में ओमेगा थ्री–

कद्दू के बीज को आमतौर पर बेकार समझकर फेंक दिया जाता है। बीज पूरे फल के भाग का लगभग 3.1 फीसदी हिस्सा होता है। इसमें प्रोटीन की मात्रा भरपूर होती है। कद्दू में लीनोलिक अम्ल मुख्य है, जो ओमेगा थ्री का स्रोत है। यह कोलेस्ट्राल और ब्लड शुगर नियंत्रित रखने में सक्षम है। वहीं हाई डाइट्री फाइबर होने के चलते इसके गुण और बढ़ जाते हैं। कद्दू के गूदे में ऊष्मा, प्रोटीन, स्टार्च आदि पौष्टिक तत्व होते हैं। इसमें विटामिद ए के अलावा कई खनिज लवण भी होते हैं।

दो साल की कड़ी मेहनत के बाद कद्दू के बीज से उत्पाद तैयार किए हैं डॉ0 अंजू धीमान और डॉ0 सुरेखा के मुताबिक यह रिसर्च जल्द ही नौणी वि0वि0 के जर्नल में छपेगी। जल्द ही प्रदेश के किसानों को इसका प्रशिक्षण दिया जाएगा।

शोध के मुताबिक (प्रति सौ ग्राम)

पौष्टिक तत्व	37.33
रेशा	01.85
पीएच	06.85
एस्कॉर्बिक एसिड	12.26
कॉपर	0.309
मैगनीज	2.983

❖❖❖

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

उर्दू सीखिये —इदारा

तशदीद का बयान تشدید کا بیان

उर्दू के जिस अक्षर या उसके शोशे पर तशदीद का चिन्ह बना देते हैं उस अक्षर को दो बार पढ़ते हैं।

एक बार साकिन (गतिहीन) और दूसरी बार मुतहर्रिक (गतिशील) जैसे ابّا (अब्बा) پتّا (पत्ता) چھلّا (छल्ला) بلّا (बल्ला) رسّا (रस्सा) کچّا (कच्चा) سچّا (सच्चा) بچّہ (बच्चा) غصّہ (गुस्सा) قصّہ (क़िस्सा) ڈبّا (डिब्बा) परन्तु याद रहे कि अरबी के जो विशेष शब्द ال अल के साथ लिखे जाते हैं और अल के पश्चात शब्द का पहला अक्षर शमसी होता है उस पर भी तशदीद होती है और उसके उच्चारण में अल का ل (ल) नहीं पढ़ा जाता अतः हिन्दी में उसका ل (ल) हटा कर लिखते हैं परन्तु उर्दू में ل (ल) हटाना वर्जित है जैसे الرّشید (अर्रशीद) التّواب (अत्तव्वाब) الرّحمٰن (अर्रहमान) الرّحیم (अर्रहीम). इन शब्दों को उर्दू में ارّسید ارّحیم ارّحمٰن اتّواب लिखना ग़लत है, याद रहे اللہ संसार के ख़ालिक व मालिक का व्यक्तित्व नाम है उर्दू में इसका इसी रूप में लिखना आवश्यक है الّاہ लिखना निषेध है इस का शुद्ध रूप اللہ ही है।

नून गुन्ना का बयान

उर्दू में कुछ शब्दों के अन्त में ں लिखते हैं परन्तु ں में बिन्दी नहीं लिखते इसको नून गुन्ना कहते हैं जैसे جہاں (जहाँ) کہاں (कहाँ) وہاں (वहाँ) یہاں (यहाँ) نہاں (निहाँ) رواں (रवाँ) ماں (माँ) ہاں (हाँ) نہیں (नहीं) یہیں (यहीं) وہیں (वहीं) आदि इसको नून गुन्ना ں इसलिए कहते हैं कि ں नून की आवाज़ नाक से निकालते हैं